अपठित काव्यांश

अपठित काव्यांश का अर्थ

कविता (काव्य) का ऐसा अंश जिसका पहले कभी अध्ययन नहीं किया गया हो, वह अपठित काव्यांश कहलाता है। अपठित काव्यांश का उद्देश्य काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ जानना, भाव समझना, विश्लेषण करना, काव्य सौंदर्य को समझना, भाषा-शैली को पहचानना आदि में विद्यार्थियों की क्षमता को परखना होता है। अपठित काव्यांश के अंतर्गत विद्यार्थियों को भावार्थ (मूल भाव) व केंद्रीय भाव को समझकर उसका सावधानीपूर्वक, गंभीरता व गहनता से अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है। परीक्षा में 5-5 अंक के दो अपठित काव्यांश दिए जाएँगे, जिनमें से किसी एक काव्यांश पर आधारित 1-1 अंक के 5 बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।

अपठित काव्यांश को हल करने के तरीके

- सर्वप्रथम दिए गए अपठित काव्यांश को दो-तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके मूलभाव को आत्मसात् (समझना) करना चाहिए।
- काव्यांश में दिए गए महत्त्वपूर्ण संदर्भों को रेखांकित करते रहना चाहिए। इससे बहुविकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक सही विकल्प का चुनाव करने में आसानी होती है।
- भाषिक संरचना एवं व्याकरण संबंधी प्रश्नों के लिए काव्यांश में दिए गए कठिन शब्दों को रेखांकित करना चाहिए।
- सभी प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़ने व समझने के पश्चात् ही उसके सही विकल्प का चुनाव करना चाहिए।
- अंत में एक बार सभी प्रश्नों के उत्तर को ध्यानपूर्वक पढ़कर जाँच लेना चाहिए।

अपठित काव्यांश के प्रश्नों को हल करते समय ध्यान रखने योग्य बातें

- काव्यांश के भावार्थ (मूल भाव) को उचित प्रकार समझना चाहिए तथा प्रश्नों के उत्तर काव्यांश में ही ढूँढने चाहिए।
- कवि के विचारों को ध्यान में रखकर ही सर्वाधिक उचित विकल्प का चुनाव अपने उत्तर के रूप में करना चाहिए।
- काव्यांश में प्रयुक्त कठिन शब्दों एवं काव्य-पंक्ति को समझने के लिए काव्यांश के संदर्भ में ही समझने का प्रयास करना चाहिए और उसी के अनुरूप अपने उत्तर का चयन करना चाहिए।
- काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के सही विकल्प को एक बार फिर से पढ़ लेना चाहिए।
- सही उत्तर के विकल्प का चुनाव करते समय एकाग्र होना चाहिए तथा प्रश्न की प्रकृति पूरी तरह स्पष्ट होने पर ही विकल्प का चयन करना चाहिए।
- विद्यार्थियों को इन चार विकल्पों में से अपने पठन कौशल के आधार पर एक सही विकल्प का चुनाव अपने उत्तर के रूप में करना होता है।
- भाषा संबंधी प्रश्नों का उत्तर देते समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

अपठित काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांश 1

कोई खंडित, कोई कुंठित,
कृश बाहु, पसलियाँ रेखांकित,
टहनी-सी टाँगें, बढ़ा पेट,
टेढ़े-मेढ़े, विकलांग घृणित!
विज्ञान चिकित्सा से वंचित,
ये नहीं धात्रियों से रक्षित,
ज्यों स्वास्थ्य सेज हो, ये सुख से
लोटते धूल में चिर परिचित!
पशुओं-सी भीत मूक चितवन,
प्राकृतिक स्फूर्ति से प्रेरित मन,
तृण तरुओं-से उग-बढ़, झर-गिर,
ये ढोते जीवन क्रम के क्षण!
कुल मान न करना इन्हें वहन,
चेतना ज्ञान से नहीं गहन,
जग जीवन धारा में बहते
ये मूक, पंगु बालू के कण!

(CBSE प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 2020)

I. प्रस्तुत पद्यांश आपके अनुसार किस विषय पर लिखा गया है?
(क) गाँव के बच्चों में कुपोषण की समस्या पर
(ख) गाँव के बच्चों में चेतना ज्ञान के अभाव पर
(ग) गाँव में चिकित्सा सुविधाओं के अभाव पर
(घ) गाँव के बच्चों की दयनीय दशा पर

II. दूसरे पद में कवि कह रहा है कि
(क) गाँव में विज्ञान की शिक्षा नहीं दी जा रही है
(ख) गाँव मे शिशु जन्म हेतु पर्याप्त दवाइयाँ नहीं हैं
(ग) गाँव में बच्चे स्वास्थ्य के प्रति सजग रहकर शारीरिक व्यायाम कर रहे हैं
(घ) गाँव में बच्चे अपने मित्रों के साथ धूल में कुश्ती जैसे खेल खेल रहे हैं

III. गाँव के बच्चों की स्थिति कैसी है?
(क) कुपोषित, खिन्न तथा अशिक्षित
(ख) क्षीणकाय, किंतु कुल के मान का ध्यान करने वाले
(ग) प्राकृतिक वातावरण में रहते हुए स्फूर्ति से भरे हुए
(घ) पशुओं की तरह बलिष्ठ परंतु असहाय व मूक

IV. प्रस्तुत पद्यांश में कवि का रवैया कैसा प्रतीत होता है?
(क) वे बच्चों की दशा के विषय में व्यंग कर मनोरंजन करना चाह रहे हैं
(ख) वे बच्चों की दशा की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं
(ग) वे तटस्थ रहकर बच्चों की शारीरिक व मानसिक दशा का वर्णन कर रहे हैं
(घ) वे बच्चों की शारीरिक व मानसिक दशा से संतुष्ट प्रतीत होते हैं

V. तृण-तरुओं से उग-बढ़ ..... इस पंक्ति का क्या अर्थ है?
(क) घास-फूस की तरह हल्के हैं इसलिए तिनकों की तरह उड़ रहे हैं
(ख) पौधों तथा घास की तरह बिना कुछ खाए-पिए बढ़ रहे हैं
(ग) घास तथा पौधों की तरह पैदा हो रहे हैं तथा मर रहे हैं
(घ) प्राकृतिक वातावरण में घास व पौधों की तरह फल-फूल रहे हैं

काव्यांश 2

टकराएगा नहीं आज उद्धत लहरों से,
कौन ज्वार फिर तुझे पार तक पहुँचाएगा?
अब तक धरती अचल रही पैरों के नीचे,
फूलों की दे ओट सुरभि के घेरे खींचे,
पर पहुँचेगा पथी दूसरे तट पर उस दिन,
जब चरणों के नीचे सागर लहराएगा।
गर्त शिखर बन, उठे लिए भँवरों का मेला,
हुए पिघल ज्योतिष्क तिमिर की निश्चल बेला,
तू मोती के द्वीप स्वप्न में रहा खोजता,
तब तो बहता समय शिला-सा जम जाएगा,
धूल पोंछ काँटे मत गिन छाले मत सहला
मत ठंडे संकल्प आँसुओं से तू बहला,
तुझसे हो यदि अग्नि-स्नात यह प्रलय महोत्सव
तभी मरण का स्वस्ति-गान जीवन गाएगा
टकराएगा नहीं आज उन्मद लहरों से
कौन ज्वार फिर तुझे दिवस तक पहुँचाएगा?

(CBSE प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 2020)

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

I. प्रस्तुत पद्यांश का क्या उद्देश्य प्रतीत होता है?
(क) आत्मविश्वास जगाने हेतु द्रष्टांत प्रस्तुति करना
(ख) प्रत्येक परिस्थिति में कार्य करने की प्रेरणा देना
(ग) जागृति व उत्साहित करने हेतु प्रेरणा देना
(घ) जीवन दर्शन के विषय में प्रोत्साहन देना

II. "तू मोती के द्वीप स्वप्न में रहा खोजता" प्रस्तुत पंक्ति का क्या भाव है?
(क) मोतियों के समान आँसुओं को स्वप्न में आने वाले सुंदर द्वीपों पर नष्ट नहीं करना चाहिए
(ख) मोती के द्वीप खोजने के लिए सागर में दूर-दूर जाकर कष्टदायी विचरण करना होगा
(ग) जीवन संसाधनों के लिए यथार्थ में रहकर प्रयत्न करना होगा
(घ) यदि ऐसा होगा तो जीवन शिला-सा जम जाएगा

III. "तुझसे हो यदि अग्नि-स्नात" प्रस्तुत पंक्ति का क्या अर्थ है?
(क) यदि तुम जीवन की कष्टतम परिस्थिति झेल लोगे, तो जीवन तुम्हारे बलिदान की प्रशंसा करेगा
(ख) यदि तुम आग के दरिया में डूबकर जाने को तैयार हो तो जीवन-मरण के बंधन से मुक्त हो सकोगे
(ग) जीवन प्रलय के महोत्सव में आग लगाने वाला ही सफलतम वीर कहलाएगा
(घ) यदि तुम जीवन में बलिदान करोंगे, तो जग सदा तुम्हारे जीवन की सराहना करेगा

IV. समय को गतिशील करने के लिए क्या आवश्यक है?
(क) समय का सदुपयोग कर मानव कल्याण में लगे रहना
(ख) तुच्छ कार्यों में संलग्न न रहकर समय नष्ट होने से बचाना
(ग) अपने हाल की परवाह न करते हुए सकारात्मक भाव से कार्य करते रहना
(घ) 'टाल मटोल-समय का चोर' कथानानुसार स्वस्ति (शुभ) कार्य करने में टाल-मटोल न करना।

V. प्रस्तुत पद्यांश के अनुसार 'फूलों की ओट व सुरभि के घेरे' व्यक्ति के जीवन में क्या कार्य कर सकते हैं?
(क) वे व्यक्ति के जीवन को अपनी सुगंध से शांत व एकाग्र कर सकते हैं
(ख) वे अपने औषधीय गुणों से व्यक्ति का जीवन व्याधिमुक्त कर सकते हैं
(ग) वे उसे लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग से विचलित कर सकते हैं
(घ) फूल उर्वरता व समृद्धि का प्रतीक हैं इसलिए वे जीवन में ईश्वर के प्रति निकटता लाने में सहायक हो सकते हैं

काव्यांश 3

लक्ष्य तक पहुँचे बिना, पथ में पथिक विश्राम कैसा।
लक्ष्य है अति दूर दुर्गम मार्ग भी हम जानते हैं;
किंतु पथ के कंटकों को हम सुमन ही मानते हैं,
जब प्रगति का नाम जीवन, यह अकाल विराम कैसा।।
धनुष से जो छूटता है बाण कब मग में ठहरता
देखते-देखते वह लक्ष्य का ही बेध करता
लक्ष्य प्रेरित बाण है हम, ठहरते का काम कैसा।।
बस वही है पथिक जो पथ पर निरंतर अग्रसर हो,
हो सदा गतिशील जिसका लक्ष्य प्रतिक्षण निकटतर हो।
हार बैठे जो डगर में पथिक उसका नाम कैसा।।
बाल रवि को स्वर्ण किरणें निमिष में भू पर पहुँचती,
कालिमा का नाश करती, ज्योति जगमग जगत धरती
ज्योति के हम पुँज फिर हमको अमा से भीति कैसा।।
आज तो अति ही निकट है देख लो वह लक्ष्य अपना,
पग बढ़ाते ही चलो बस शीघ्र होगा सत्य सपना।
धर्म-पथ के पथिक को फिर देव दक्षिण वाम कैसा।।

I. पथ के कंटक को सुमन मानने से क्या आशय है?
(क) हम बाधाओं की चिंता नहीं करते
(ख) हम मार्ग की बाधाओं से प्रसन्न होते हैं
(ग) बाधाओं से जूझना ही हमारा लक्ष्य है
(घ) मार्ग की बाधाओं को स्वीकार करके चलते हैं

II. 'कंटक' किसका प्रतीक है?
(क) स्वार्थों का (ख) बाधाओं का
(ग) सुख-सुविधाओं का (घ) कष्टों का

III. काव्यांश के अनुसार, पथिक कौन है?
(क) जो अपनी डगर में कभी हार नहीं मानता
(ख) जो अपने पथ पर निरंतर अग्रसर हो
(ग) जो सदा गतिशील रहे और अपने लक्ष्य के निकट हो
(घ) उपरोक्त सभी

IV. अंधेरे को नष्ट कर पृथ्वी को उजाले से कौन भर देता है?
(क) चंद्रमा की रोशनी (ख) सूर्य की किरणें
(ग) ईश्वर की शक्ति (घ) तारों की छाँव

V. 'लक्ष्य प्रेरित बाण हैं हम' पंक्ति का क्या भाव है?
(क) हम लक्ष्य की ओर चले हुए पथिक हैं
(ख) हम हर हालत में विजयी होंगे
(ग) हम लक्ष्य को नष्ट करके रहेंगे
(घ) हम लक्ष्य की बाधाओं को नष्ट करके रहेंगे

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

काव्यांश 4

सागर के उर पर नाच-नाच करती हैं लहरें मधुरगान
प्रात: समीर से हो अधीर,
छूकर पल-पल उल्लसित तीर,
कुसुमावलि-सी पुलकित महान,
सागर के उर पर नाच-नाच करती हैं लहरें मधुरगान।
संध्या-से पाकर रुचि रंग
करती-सी शत सुर-चाप भंग
हिलती नव तरु-दल के समान,
सागर के उर पर नाच-नाच करती हैं लहरें मधुरगान।
करतल-गत कर नभ की विभूति,
पाकर शशि से सुषमानुभूति
तारावलि-सी मृदु दीप्तिमान,
सागर के उर पर नाच-नाच करती हैं लहरें मधुरगान।
तन पर शोभित नीला दुकूल
हैं छिपे हृदय में भाव फूल
आकर्षित करती हुई ध्यान,
सागर के उर पर नाच-नाच करती हैं लहरें मधुरगान।

I. लहरें कहाँ नाचकर मधुर गान करती हैं?
(क) समुद्र के जल में (ख) समुद्र के उर पर
(ग) नदी में (घ) समुद्र के हृदय पर

II. 'कुसुमावलि' शब्द का संधि-विच्छेद होगा
(क) कुसु + मावलि (ख) कुसुम + अवलि
(ग) कुसुम + वलि (घ) कु + सुमावलि

III. 'सुरचाप भंग करना' क्या होता है?
(क) अत्यंत सुंदर
(ख) देवताओं का चाप भंग कर देना
(ग) इंद्रधनुषों की शोभा को पीछे छोड़ देना
(घ) सुर की चाप टूट जाती है

IV. कवि ने लहरों की क्या विशेषता बताई है?
(क) उनके प्राण एक सूत्र में बँधे हुए हैं
(ख) उनके स्वर एक सूत्र में बँध हुए हैं
(ग) उनके रंग एक सूत्र में बँधे हुए हैं
(घ) उनके भाव एक सूत्र में बँधे हुए हैं

V. नीला दुकूल क्या है?
(क) चारों ओर फैली नीलिमा
(ख) नीला दुपट्टा
(ग) आकाश को नीलिमा
(घ) नीला सागर जल

काव्यांश 5

सच हम नहीं सच तुम नहीं
सच है महज संघर्ष हो।
संघर्ष से हटकर जिए तो क्या जिए हम कि तुम,
जो नत हुआ वह मृत हुआ ज्यों वृक्ष से
झरकर कुसुम जो लक्ष्य भूल सका नहीं
जो हार देख झुका नहीं।
जिसने प्रणय पाथेय माना जीत उसकी रही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।
ऐसा करो जिससे न प्राणों में कहीं जड़ता रहे।
जो भी जहाँ चुपचाप अपने आपसे लड़ता रहे।
जो भी परिस्थितियाँ मिलें।
काँटे चुभें, कलियाँ खिलें।
हारे नहीं इंसान है संदेश जीवन का यही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।

I. कवि ने जीवन का सच किसे माना है?
(क) संघर्ष (ख) हम
(ग) तुम (घ) हम और तुम

II. कवि के अनुसार जीत उसी की होती है, जो
(क) हर परिस्थिति को चुनौती के रूप में स्वीकार नहीं करता
(ख) समस्याओं से नहीं घबराता
(ग) जो डर जाता है
(घ) संघर्षों से डरकर पीछे हट जाता है

III. 'कुसुम' शब्द का पर्यायवाची इनमें से कौन-सा शब्द नहीं है?
(क) पुहुप (ख) सुमन
(ग) प्रसून (घ) गुलाब

IV. 'जो नत हुआ वह मृत हुआ' पंक्ति से कवि का आशय है
(क) जो सतत चलता नहीं, वह मर जाता है
(ख) जो गिरता है, उसका पतन होता है
(ग) जो झुक गया, वही सफल हो गया
(घ) जो झुक गया, वह मर गया

IV. उपर्युक्त काव्यांश के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?
(क) वृक्ष से झड़कर फूल मुरझा जाता है
(ख) हमें विषम परिस्थितियों में हार नहीं माननी चाहिए
(ग) किसी को अपना लक्ष्य नहीं भूलना चाहिए
(घ) संसार में कुछ भी सत्य नहीं है

Join @booksforcbse for more.
WWW.JEEBOOKS.IN
Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

काव्यांश 6

ओ बसुधा के रहने वालो! रहो सर्वदा प्यार से।।
नाम अलग है देश-देश के, पर वसुंधरा एक है।
फल-फूलों के रूप अलग पर भूमि उर्वरा एक है।
धरा बाँटकर हृदय न बाँटो दूर रहो संहार से।।
कभी न सोचो तुम अनाथ, एकाकी या निष्प्राण रे।
बूँद-बूँद करती हैं मिलकर, सागर का निर्माण रे।
लहर-लहर देती संदेश यह दूर क्षितिज के पार से।।
धर्म वहीं है जो करता है मानव का उद्धार रे।
धर्म नहीं वह जो कि डाल दे, दिल में एक दरार रे।
करो न दूषित आँगन मन का, नफरत की दीवार से।।

I. धरती को बाँटने के बाद मनुष्य अब प्रयास कर रहा है
(क) समुद्र को बाँटने का (ख) हृदय को बाँटने का
(ग) इंसान को बाँटने का (घ) आकाश को बाँटने का

II. मनुष्य को कभी नहीं सोचना चाहिए
(क) कि वह एकाकी नहीं है
(ख) कि वह निष्प्राण नहीं है
(ग) कि वह अनाथ है
(घ) कि वह सर्वज्ञ है

III. काव्यांश के अनुसार धर्म क्या है?
(क) जो नफरत की दीवार पैदा करे
(ख) जो मानव का उद्धार करता है
(ग) जो हृदय को दूषित कर दे
(घ) जो दिल में दरार डाल दे

IV. काव्यांश का उचित शीर्षक बताइए
(क) हमारी वसुधा (ख) भूमि उर्वरा
(ग) रहो सर्वदा प्यार से (घ) मातृभूमि

V. प्रस्तुत काव्यांश का आशय क्या है?
(क) सब मिल-जुलकर प्यार से रहें
(ख) अपने धर्म का आचरण दृढ़ता से करें
(ग) धर्म से मानव के बीच नफरत पैदा होती है
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

काव्यांश 7

जगपति कहाँ? अरे, सदियों से वह तो हुआ राख की ढेरी;
वरना समता-संस्थापन में लग जाती क्या इतनी देरी?
छोड़ आसरा अलख शक्ति का; रे नर, स्वयं जगपति तू है,
तू यदि जूठे पत्तल चाटे, तो मुझ पर लानत है, थू है।
कैसा बना रूप यह तेरा, घृणित, पतित, वीभत्स, भयंकर!
नहीं याद क्या तुझको, तू है कि चिर सुंदर, नवीन प्रलयंकर?
भिक्षा-पात्र फेंक हाथों से, तेरे स्नानु बड़े बड़शाली,
अभी उठेगा प्रलय नींद से, तनिक बजा तू अपनी ताली।
ओ भिखमँगे, अरे पराजित, ओ मजलूम, अरे चिरदोहित,
तू अखंड भंडार शक्ति का; जाग, अरे निद्रा-सम्मोहित
प्राणों को तड़पाने वाली हुँकारों से जल-थल भर दे,
अनाचार के अंबारों में अपना ज्वलित पलीता धर दे।
भूखा दो तुझे गर उमड़े आँसू नयनों में जन-जन के
तो तू कह दे, नहीं चाहिए हमको रोने वाले जनखे;
तेरी भूख, असंस्कृति तेरी, यदि न उभाड़ सके क्रोधानल
तो फिर समझूँगा कि हो गई सारी दुनिया कायर निर्बल।

I. प्रथम चार पंक्तियों में कवि ने लोगों को किस बात के लिए लताड़ा है?
(क) जूठे पत्तल चाटने अर्थात् चाटुकारिता करने के लिए
(ख) राजा या शासक पर आश्रित रहने के लिए
(ग) अलख या अगोचर शक्ति का आश्रय छोड़ने के लिए
(घ) उपरोक्त सभी बातों के लिए लताड़ा है

II. दूसरे पद के माध्यम से कवि लोगों से क्या कहना चाहता है?
(क) वह लोगों से उनका रूप देखने के लिए कहता है
(ख) वह लोगों को उनकी शक्ति का स्मरण कराना चाहता है
(ग) भिक्षा-पात्र फेंकने और प्रलय-नींद से जगने का आह्वान करता है
(घ) वह लोगों को उनकी सुंदरता के बारे में बताना चाहता है

III. 'मनुष्य को अपने असीमित बल को पहचानना चाहिए'- यह अर्थ किस पंक्ति से निकल रहा है?
(क) भिक्षा-पात्र फेंक हाथों से, तेरे स्नानु बड़े बलशाली
(ख) प्राणों को तड़पाने वाली हुँकारों से जल-थल भर दे
(ग) तू अखंड भंडार शक्ति का; जाग, अरे निद्रा-सम्मोहित
(घ) नहीं याद क्या तुझको, तू है चिर सुंदर, नवीन प्रलयंकर

IV. कवि को ईश्वर से क्या शिकायत है?
(क) वह अमीर-गरीब का भेद मिटाने में असमर्थ हो गया है
(ख) वह वर्षा नहीं करता है
(ग) वह भेदभाव मिटा देता है
(घ) उपरोक्त सभी

V. 'क्रोधानल' शब्द का संधि-विच्छेद होगा
(क) क्रोधान + ल (ख) क्रोध + अनल
(ग) क्रोधा + नल (घ) क्रो + धानल

www.FreeBooksCbse.in

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

काव्यांश 8

इन नए बसते इलाकों में
जहाँ रोज़ बन रहे हैं नए-नए मकान
मैं अक्सर रास्ता भूल जाता हूँ
धोखा दे जाते हैं पुराने निशान
खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़
खोजता हूँ ढहा हुआ घर
और ज़मीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बाएँ
मुड़ना था मुझे
फिर दो मकान बाद बिना रंग वाले लोहे के फाटक
का घर था इकमंज़िला
और मैं हर बार एक घर पीछे
चल देता हूँ
या दो घर आगे ठकमकाता
यहाँ रोज़ कुछ बन रहा है
रोज़ कुछ घट रहा है
यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं
एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया
जैसे बसंत का गया पतझड़ को लौटा हूँ
अब यही है उपाय कि हर दरवाज़ा खटखटाओ
और पूछो-क्या यही है वो घर?
समय बहुत कम है तुम्हारे पास
आ चला पानी ढहा आ रहा अकास
शायद पुकार ले कोई पहचाना ऊपर से देखकर।

I. कवि अक्सर अपना रास्ता क्यों भूल जाता है?
(क) उसकी भूलने की आदत है
(ख) वहाँ रोज़ नए-नए से रास्ते बन जाते हैं
(ग) वहाँ प्रतिदिन नए मकान बन जाते हैं
(घ) कवि अक्सर अपना मकान बदल लेता है

II. कवि अपने घर के लिए कहाँ से मुड़ता है?
(क) पीपल के पेड़ के पास से
(ख) धराशायी हुए मकान से
(ग) लोहे के फाटक के पास से
(घ) ज़मीन के खाली टुकड़े के पास से

III. 'रोज़ कुछ घट रहा है'—पंक्ति में क्या घटने की बात की जा रही है?
(क) कवि अपने घर नहीं पहुँच पाता है
(ख) कवि की याददाश्त कमज़ोर पड़ती जा रही है
(ग) कवि के घर के आस-पास नित नए मकान बनते जा रहे हैं
(घ) एक ही दिन में दुनिया छोटी पड़ जाती है

IV. 'जैसे बसंत का गया पतझड़ को लौटा हूँ' का आशय क्या है?
(क) कवि बैसाख में गया, किंतु भादों महीने में लौटा
(ख) वह गर्मी में गया और वर्षा ऋतु में लौटा
(ग) उसे लग रहा है कि वह लंबे समय बाद लौटा है
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

V. 'नए-नए मकान' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(क) उपमा
(ख) रूपक
(ग) अनुप्रास
(घ) पुनरुक्ति प्रकाश

काव्यांश 9

तेजस्वी सम्मान खोजते नहीं गोत्र बतला के,
पाते हैं जग में प्रशस्ति अपना करतब दिखला के।
हीन मूल की ओर देख जग गलत कहे या ठीक,
वीर खींच कर ही रहते हैं इतिहासों में लीक।
जिसके पिता सूर्य थे, माता कुंती सती कुमारी,
उसका पलना हुआ धार पर बहती हुई पिटारी।
सूत-वंश में पला चखा भी नहीं जननि का क्षीर,
निकला कर्ण सभी युवकों में तब भी अद्‌भुत वीर।
तन से समरशूर मन से भावुक, स्वभाव से दानी,
जाति-गोत्र का नहीं, शील का, पौरुष का अभिमानी।
सान-ध्यान, शस्त्रास्त्र शास्त्र का कर सम्यक् अभ्यास,
अपने गुण का किया कर्ण ने आप स्वयं सुविकास।

I. संसार में तेजस्वी लोग वही होते हैं, जो
(क) अपना कुल-शील बतलाकर प्रशस्ति पाते हैं
(ख) अपने मुख से अपने गुणों का बखान करते हैं
(ग) अपना गोत्र बतलाकर नहीं, करतब दिखलाकर यश पाते हैं
(घ) माता-पिता के धन की बदौलत यशस्वी दिखाई देते हैं

II. 'इतिहासों में लीक' खींचने से कवि का क्या आशय है?
(क) वीर पुरुष इतिहास में दरार डाल देते हैं
(ख) वीर पुरुष कभी भी अपने अतीत से नहीं डरते
(ग) वीर पुरुष हमेशा इतिहास में छाए रहते हैं
(घ) वीर पुरुष अपना नाम इतिहास में लिखवा ही लेते हैं

III. कर्ण किस प्रकार के गुणों से युक्त महारथी थे?
(क) जाति-वंश के गुणों से
(ख) शील और पौरुष जैसे श्रेष्ठ गुणों से
(ग) चाटुकारिता और बनावटीपन से
(घ) अहंकार और दर्प से

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

IV. पैदा होने पर कर्ण को कैसे पालने में झुलाया गया था?
(क) जलधारा पर बहती हुई पेटी के पालने में
(ख) रेशमी धागों से बुने पालने में
(ग) निबाड़ से बुने हुए पालने में
(घ) लोहे के संदूकनुमा पालने में

V. कविता में कर्ण को तन, मन और स्वभाव से क्रमशः बताया गया है
(क) क्षीण, कृपण और कुटिल
(ख) बलिष्ठ, भावुक और कृपण
(ग) समरशूर, भावुक और दानी
(घ) कायर, भावुक और कृपण

काव्यांश 10

कैसे बेमौके पर तुमने ये
मज़हब के शोले सुलगाए।
मानव-मंगल-अभियानों में
जब नया कल्प आरंभ हुआ
जब चंद्रलोक की यात्रा के
सपने सच होने को आए।
तुम राग अलापो मज़हब का
पैग़ंबर को बदनाम करो,
नापाक हरकतों में अपनी
रूहों को कत्लेआम करो!
हम प्रजातंत्र में मनुष्यता के
मंगल-कलश सँवार रहे
हर जाति-धर्म के लिए
खुला आकाश-प्रकाश पसार रहे।
उत्सर्ग हमारा आज
हिमालय की चोटी छू आया है।
सदियों की कालिख को
हमने बलिदानों से धोना है
मानवता की खुशहाली की
हरियाली फ़सलें बोना है।
बढ़-बढ़कर बातें करने की
बलिदानी रटते बान नहीं
इतना तो तुम भी समझ गए
यह कल का हिंदुस्तान नहीं।

I. 'मज़हब के शोले' से तात्पर्य है
(क) विभिन्न धर्मों से संबंधित बातें
(ख) धर्म पर आधारित नफ़रत की बातें
(ग) धर्म का उपदेश देने वाली बातें
(घ) धार्मिक विषयों पर विवादास्पद बातें

II. मज़हब के शोले सुलगाने का यह मौका नहीं है, क्योंकि
(क) आधुनिक युग में ये बातें शोभाकर नहीं हैं
(ख) चंद्रलोक की यात्रा की तुलना में ये बातें हीन लगती हैं
(ग) प्रगतिशील दृष्टिकोण ऐसी बातों को बेतुकी मानता है
(घ) आज का इंसान ऐसी बातों मे आस्था नहीं रखता

III. 'मज़हब का राग' अप्रासंगिक है, क्योंकि प्रजातंत्र
(क) मज़हबी राग में विश्वास नहीं रखता
(ख) जाति और धर्म को मानवता का हितकारी समझता है
(ग) समाज को संकुचित दृष्टिकोण से नहीं देखता
(घ) खुले आकाश के सामने देखता है

IV. "हरियाली फसलें बोना है" कथन का आशय है
(क) मानवता को बढ़ावा देना
(ख) देश को फलता-फूलता देखना
(ग) सामाजिक भेदभाव मिटाना
(घ) सांप्रदायिकता का विरोध करना

V. "बढ़-बढ़कर बातें करने की, बलिदानी रटते बान नहीं" में निहित अलंकार है
(क) यमक (ख) अनुप्रास
(ग) उपमा (घ) रूपक

काव्यांश 11

मुँह ढाँककर सोने से बहुत अच्छा है,
कि उठो ज़रा,
कमरे की गर्द को ही झाड़ लो।
शेल्फ में बिखरी किताबों का ढेर,
तनिक चुन दो।
छितरे-छितराए सब तिनकों को फेंको।
खिड़की के उढ़के हुए,
पल्लों को खोलो।
ज़रा हवा ही आए।
सब रोशन कर जाए।
..... हाँ, अब ठीक
तनिक आहट से बैठो,

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

जाने किस क्षण कौन आ जाए।
खुली हुई फिज़ा में,
कोई गीत ही लहरा जाए।
आहट में ऐसे प्रतीक्षातुर देख तुम्हें,
कोई फरिश्ता ही आ जाए।
माँगने से जाने क्या दे जाए।
नहीं तो स्वर्ग से निर्वासित,
किसी अप्सरा को ही,
यहाँ आश्रय दीख पड़े।
खुले हुए द्वार से बड़ी संभावनाएँ हैं, मित्र!
नहीं तो जाने क्या कौन,
दस्तक दे-देकर लौट जाए।
सुनो,
किसी आगत की प्रतीक्षा में बैठना,
मुँह ढाँककर सोने से बहुत बेहतर है।

I. प्रथम दो पंक्तियों से कवि का तात्पर्य है

(क) आस-पास घट रही घटनाओं पर ध्यान दो
(ख) मुँह को हमेशा ढके रखो
(ग) मुँह की अत्यंत परवाह करके सोए रहो
(घ) शर्म से मुँह ढके रहो

II. "कमरे की गर्द को ही झाड़ लो" इस पंक्ति द्वारा कवि कहना चाहता है कि

(क) कमरे की सफ़ाई ही कर लो
(ख) कमरे की धूल पर भी ध्यान दो
(ग) कम-से-कम कुछ तो रचनात्मक कार्य कर लो
(घ) कमरे के सौंदर्य को खराब मत करो

III. "खिड़की के उढ़के हुए, पल्लों को खोलो" पंक्ति में 'खिड़की' का अर्थ है

(क) मस्तिष्क में आए विचार
(ख) मन की खिड़की
(ग) हृदय में उठने वाले विचार
(घ) दिल में उठने वाले विचार

IV. "दस्तक दे-देकर लौट जाए" पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(क) अनुप्रास (ख) यमक
(ग) रूपक (घ) श्लेष

V. प्रस्तुत काव्यांश का भाव क्या है?

(क) हमें मुँह ढककर नहीं सोना चाहिए
(ख) जीवन में हमेशा सचेत और गतिशील रहना चाहिए
(ग) संभावनाओं का हमेशा आदर करना चाहिए
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

काव्यांश 12

मुक्त करो नारी को, मानव!
चिर बंदिनि नारी को,
युग-युग की बर्बर कारा से
जननि, सखी, प्यारी को!
छिन्न करो सब स्वर्ण-पाश
उसके कोमल तन-मन के,
वे आभूषण नहीं, दाम
उसके बंदी जीवन के!
उसे मानवी का गौरव दे
पूर्ण सत्व दो नूतन,
उसका मुख जग का प्रकाश हो,
उठे अंध अवगुंठन।
मुक्त करो जीवन-संगिनि को,
जननि देवि को आदृत
जगजीवन में मानव के संग
हो मानवी प्रतिष्ठित!
प्रेम स्वर्ग हो धरा, मधुर
नारी महिमा से मंडित,
नारी-मुख की नव किरणों से
युग-प्रभाव हो ज्योतित!

I. कवि नारी को किस दशा से मुक्त कराना चाहता है?

(क) समाज के बंधन से (ख) पुरुष के बंधन से
(ग) परिवार के बंधन से (घ) स्त्री-रूपी बंधन से

II. 'छिन्न करो सब स्वर्ण पाश' से क्या तात्पर्य है?

(क) नारी को लोहे की जंजीरों से अलग करना
(ख) नारी को समाज से अलग करना
(ग) नारी को सोने के आभूषण से अलग करना
(घ) नारी को सब प्रकार की वस्तुओं से अलग करना

III. कवि नारी को किस-किस रूप में प्रतिष्ठित करना चाहता है?

(क) बंदिनी के रूप में
(ख) माता के रूप में
(ग) संघर्षी के रूप में
(घ) मानवी, युग को प्रकाश देने वाली के रूप में

IV. 'युग-युग की बर्बर कारा से' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(क) अनुप्रास अलंकार
(ख) श्लेष अलंकार
(ग) पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार
(घ) यमक अलंकार

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

V. कवि नारी को 'मानवी' के रूप में क्यों प्रतिष्ठित करना चाहता है?

(क) कवि नारी को पुरुष-प्रधान समाज से मुक्त कराना चाहता है
(ख) कवि नारी को समाज में प्रतिष्ठा दिलाना चाहता है
(ग) वह समाज में नारी की सशक्त भूमिका चाहता है
(घ) उपरोक्त सभी

काव्यांश 13

जनता? हाँ, मिट्टी की अबोध मूरतें वही,
जाड़े-पाले की कसक सदा सहने वाली,
जब अंग-अंग में लगे साँप हों चूस रहे,
तब भी न कभी मुँह खोल दर्द कहने वाली।

मानो, जनता हो फूल जिसे एहसास नहीं,
जब चाहो तभी उतार सजा लो दोनों में;
अथवा कोई दुधमुँही जिसे बहलाने के
जंतर-मंतर सीमित हों चार खिलौनों में।

लेकिन, होता भूडोल, बवंडर उठते हैं,
जनता जब कोपाकुल हो भृकुटी चढ़ाती है;
दो राह, समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

हुंकारों से महलों की नींव उखड़ जाती,
साँसों के बल से ताज हवा में उड़ता है;
जनता की रोके राह, समय में ताब कहाँ?
वह जिधर चाहती, काल उधर ही मुड़ता है।

सबसे विराट् जनतंत्र जगत् का आ पहुँचा,
तैंतीस कोटि-हित सिंहासन तैयार करो;
अभिषेक आज राजा का नहीं, प्रजा का है,
तैंतीस कोटि जनता के सिर पर मुकुट धरो।

आरती लिए तू किसे ढूँढता है मूरख,
मंदिरों, राजप्रासादों में, तहखानों में?
देवता कहीं सड़कों पर मिट्टी तोड़ रहे,
देवता मिलेंगे खेतों में खलिहानों में।

I. कवि ने भारतीय जनता की सहनशीलता का वर्णन किस रूप में किया है?

(क) भारतीय जनता सभी अत्याचार सहती है
(ख) वह हाथ जोड़े हर आज्ञा मानती है
(ग) वह मिट्टी की मूरत बनी आवाज़ नहीं उठाती
(घ) नासमझी के कारण सहनशील बनी रहती है

II. "अथवा कोई दुधमुँही जिसे बहलाने के जंतर-मंतर सीमित हों चार खिलौनों में" कथन का क्या भाव है?

(क) जनता को लालच देकर फुसलाया जा सकता है
(ख) भारतीयों को किसी लालच से फुसलाया नहीं जा सकता है
(ग) भारतीय जनता बच्चे के समान कमज़ोर नहीं है
(घ) भारतीय जनता बहुत सीधी है, उसे बहलाना कठिन नहीं है

III. जनता के क्रोध का क्या परिणाम होता है?

(क) भ्रांति (ख) शांति
(ग) क्रांति (घ) अशांति

IV. 'प्रजा का अभिषेक होने' का क्या तात्पर्य है?

(क) जनता के हाथ में सत्ता सौंपना
(ख) राजाओं को अपदस्थ करना
(ग) पर्याप्त वर्षा होना
(घ) लोकतंत्र से दूरी रखना

V. आम आदमी को 'देवता' कहा गया है, क्योंकि

(क) वह देवता जैसा सरल व गुणवान है
(ख) उसका परिश्रम वंदनीय है
(ग) उसने देवता जैसा काम किया है
(घ) उसे मुकुट पहनाया गया है

काव्यांश 14

मैं बचपन को बुला रही थी
बोल उठी बिटिया मेरी।
नंदन वन-सी फूल उठी
यह छोटी-सी कुटिया मेरी।
'माँ ओ' कहकर बुला रही थी
मिट्टी खाकर आई थी।
कुछ मुँह में, कुछ लिए हाथ में मुझे खिलाने आई थी।
पुलक रहे अंग, दृगों में
कौतूहल था छलक रहा।
मुँह पर थी आह्लाद लालिमा,
विजय-गर्व था झलक रहा।
मैंने पूछा, "यह क्या लाई?"
बोल उठी वह, "माँ काओ"
हुआ प्रफुल्लित हृदय खुशी से
मैंने कहा- "तुम्हीं खाओ"
पाया मैंने बचपन फिर से,

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

बचपन बेटी बन आया,
उसकी मंजुल मूर्ति देखकर
मुझमें नवजीवन आया।
मैं भी उसके साथ खेलती
खाती हूँ, तुतलाती हूँ।
मिलकर उसके साथ स्वयं
मैं भी बच्ची बन जाती हूँ।
जिसे खोजती थी बरसों से
अब जाकर उसको पाया।
भाग गया था मुझे छोड़कर
वह बचपन फिर से आया।

I. कवयित्री की बेटी के मुँह पर किस कारण विजय-गर्व झलक रहा था?
(क) अपनी माँ के संतोष एवं आनंद को देखकर
(ख) अपनी माँ के तुतलाने के कारण
(ग) अपने संग माँ को खेलते देखकर
(घ) स्वयं मिट्टी खाने तथा अपनी माँ को खिलाने के लिए लाने के कारण

II. कवयित्री ने अपने बचपन को किस रूप में पुनः पा लिया?
(क) बचपन की स्मृति के रूप में
(ख) अपनी बेटी के रूप में
(ग) अपनी सहेली के रूप में
(घ) स्वयं बच्ची बनकर

III. कवयित्री वर्षों से किसे खोज रही थी?
(क) अपनी बेटी को
(ख) किसी अपने को
(ग) अपने बचपन को
(घ) बचपन की अपनी सहेली को

IV. काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'दृग' का अर्थ है
(क) आँख
(ख) चेहरा
(ग) गाल
(घ) ललाट

V. कवयित्री बचपन को फिर से क्यों पाना चाहती है?
(क) क्योंकि बचपन में कोई काम नहीं करना पड़ता
(ख) क्योंकि बचपन में नए-नए खेल खेलते हैं
(ग) क्योंकि बचपन का जीवन निश्छल और चिंतारहित होता है
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

काव्यांश 15

बहती रहने दो मेरी धमनियों में
जन्मदात्री मिट्टी की गंध,
मानवीय संवेदनाओं की पावनी गंगा,
सदा-सदा को वांछित रह सकने वाले
पसीने की खारी यमुना।
शपथ खाने दो मुझे
केवल उस मिट्टी की
जो मेरे प्राणों का आदि है,
मध्य है, अन्त है।
सिर झुकाओ मेरा
केवल उस स्वतंत्र वायु के सम्मुख
जो विश्व का गरल पीकर भी
बहता है
पवित्र करने को कण-कण।
क्योंकि
मैं जी सकता हूँ
केवल उस मिट्टी के लिए,
केवल इस वायु के लिए।
क्योंकि
मैं मात्र साँस लेती
खाल होना नहीं चाहता।

I. 'जन्मदात्री मिट्टी की गंध' पंक्ति में कवि की अभिव्यक्त इच्छा का स्वरूप है
(क) मातृभूमि के प्रति गहन अनुराग
(ख) वर्षा से भीगी मिट्टी की गंध
(ग) अन्न उपजाने वाली मिट्टी की महक
(घ) जन्म देने वाली माँ के प्यार की लालसा

II. 'मानवीय संवेदनाओं की पावनी गंगा' से कवि का आशय है
(क) देशवासियों के सुख-दुःख की सहज अनुभूति
(ख) आपद्ग्रस्त देशवासियों के प्रति सहानुभूति
(ग) पीड़ित मानवता के उद्धार की अभिलाषा
(घ) मानवता के कल्याण हेतु गहन प्रेरणा

III. कवि शपथ लेना चाहता है देश की उस मिट्टी की, जो उसके
(क) जीवन को बनाने वाली है
(ख) जीवन की सर्वस्व है
(ग) रग-रग में व्याप्त है
(घ) प्राणों का आधार है

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

IV. 'मात्र साँस लेती खाल' का आशय है

(क) पुरुषार्थहीन जीवन (ख) निष्प्राण जीवन
(ग) निरुद्देश्य जीवन (घ) दिशाहीन जीवन

V. 'पवित्र करने को कण-कण' में अलंकार है

(क) यमक (ख) अनुप्रास
(ग) श्लेष (घ) उपमा

काव्यांश 16

जैसे नदी में
सिर्फ पानी नहीं बहता
फूल-पत्ते, लकड़ी, नावें,
दीप और मुर्दे तक बहते हैं;
इसी तरह मन में
सिर्फ़ विचार नहीं रहते
सुगंध और प्रकाश
विश्वास और उदासी
सब रहते हैं एक साथ
वहाँ बहाव का आधार पानी है
यहाँ प्राण और वाणी है।
पानी कहीं थम न जाए
धारा सूखने न पाए
वाणी चूकने न पाए
तो सब ठिकाने लग जाते हैं फूल-पत्ते, लकड़ी
नावें, दीप और शरीर
सुगंध और प्रकाश
विश्वास और इच्छाएँ अधीर।

I. मन में एक साथ रहने वाली वस्तुएँ हैं

(क) कई प्रकार के संघर्ष
(ख) कल्पनाओं से भरी सुखद अनुभूतियाँ
(ग) दुःख और निराशाजनक विचार
(घ) विचारों के साथ-साथ सुगंध, प्रकाश, विश्वास और उदासी जैसे सभी भाव

II. मन के संदर्भ में 'सुगंध और प्रकाश' से कवि का तात्पर्य है

(क) हँसी-मज़ाक से भरे भाव
(ख) संघर्षशील विचार
(ग) अच्छे एवं सकारात्मक विचार
(घ) बदहवासी से भरे विचार

III. मन के संदर्भ में 'ठिकाने लग जाना' का तात्पर्य है

(क) मन के विचार ठिकाने लग जाने पर अच्छी नींद आती है
(ख) मन के विचार सही हो जाने का परिणाम सुखकारी होता है
(ग) मन के विचार ठिकाने लग जाने पर दूसरे कामों की याद आती है
(घ) मन के विचार ठिकाने लग जाने पर मन परेशान हो उठता है

IV. नदी के संदर्भ में 'ठिकाने लग जाना' से तात्पर्य है

(क) नदी की धारा रुकती नहीं है और इसकी धारा में किसी प्रकार की कमी नहीं आ पाती
(ख) नदी का जल स्वच्छ हो जाता है
(ग) नदी के जल को हर कोई प्रयोग कर सकता है
(घ) नदी का जल केवल मनुष्यों के प्रयोग के लिए है

V. 'फूल-पत्ते' में समास है

(क) तत्पुरुष समास
(ख) बहुव्रीहि समास
(ग) द्वंद्व समास
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

काव्यांश 17

जब एक साथ मिल कर खेलते हैं,
एक-दूसरे के दु:ख-सुख झेलते हैं;
कभी रूठते हैं, मनाते हैं,
और फिर गले लगकर मुस्कुराते हैं।
जब हम बतियाते हैं-एक हो जाते हैं
भाषा-भूषा हमें पास लाते हैं;
पर बिना शब्दों के भी जोड़ते हैं संगीत के स्वर
जिससे होंठ गुनगुनाते हैं, पाँव थिरक जाते हैं।
हम तब भी एक होते हैं,
जब प्रकृति की गोद में होते हैं।
दीन-दुनिया से परे, चैन की नींद सोते हैं,
और सुनहरे सपनों की दुनिया सँजोते हैं।
हम तब भी एक होते हैं,
जब भय से सहम जाते हैं।
अपने मन के दरवाज़े बंद भी कर लें,
पर स्वयं को दूसरे से जुड़ा पाते हैं।
एक होने का यह भाव बड़ा अजीब है,
इसी भाव में यीशु का यश, अल्लाह का ताबीज़ है।
गुरु की वाणी है, रामनाम का बीज है,
यह परंपरा और संस्कृति की चीज़ है।

I. हम सभी तब मुस्कुराते हैं, जब

(क) मिलकर खेलते हैं
(ख) दु:ख-सुख झेलते हैं
(ग) एक-दूसरे से रूठते हैं
(घ) आपस में गले लगते हैं

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

II. भूषा का अर्थ है
(क) वेश-भूषा (ख) चारा-भूसा
(ग) सजावट (घ) शोभा

III. संगीत के स्वर बजने पर क्या होता है?
(क) हम सब मन से जुड़ जाते हैं
(ख) होंठ गुनगुनाते और पाँव थिरकते हैं
(ग) मन के दरवाज़े खुलते हैं
(घ) कर्त्तव्य के प्रति सजग होते हैं

IV. एक होने के भाव अजीब हैं, क्योंकि
(क) सभी ईश्वरीय शक्तियों की हम पर कृपा है
(ख) हम भारत में रहते हैं
(ग) हम लड़ना नहीं चाहते
(घ) हम सभी का मान करते हैं

V. 'सुनहरे सपनों की दुनिया सँजोते हैं' में अलंकार है
(क) रूपक
(ख) अनुप्रास
(ग) श्लेष
(घ) यमक

काव्यांश 18

सुख और शोक
अंधकार और आलोक
मोह और मत्सर
शांति और संघर्ष
आते-जाते बने रहें
तो आदमी को लगता है
वह जी रहा है अभी,
जब से पैदा हुआ है वह
मंशाएँ इसी तरह
उधेड़ रहा है, सी रहा है
और इसी में रमा हुआ है
कभी सुख से एक होता है
कभी शोक से
कभी अंधकार से
कभी आलोक से
गति और दुर्गति इसीलिए
उसके पाँवों में है
और गति अगर कहीं है
तो सिर्फ़ उसके घावों में है
शुरू से अब तक
वे हरे हैं, जैसे के तैसे।

I. कवि ने जीने का आधार माना है
(क) सुख और शोक को
(ख) सुख और शोक, अंधकार और आलोक, मोह और मत्सर तथा शांति और संघर्ष को
(ग) शांति और संघर्ष को
(घ) अंधकार और आलोक को

II. पैदा होने के बाद इंसान इसी उधेड़बुन में जीवित रहता है कि वह
(क) जी रहा है (ख) जी क्यों रहा है
(ग) क्या वह जी रहा है (घ) वह जी नहीं रहा है

III. 'गति और दुर्गति इसीलिए उसके पाँवों में है' कथन का भाव यह है कि
(क) उसके पैर दोनों ओर बढ़ने की क्षमता रखते हैं
(ख) उसके पैर हमेशा बुरी राह की ओर बढ़ते हैं
(ग) वह जिस ओर अपने पैर बढ़ाएगा, वैसा ही उसका परिणाम होगा
(घ) उसके पैर हमेशा अच्छी राह की ओर बढ़ते हैं

IV. 'घावों के हरे होने' से कवि का तात्पर्य है
(क) मनुष्य के पैरों में लगी चोट टीस रही है
(ख) मनुष्य के जीवन में अनेक बुरे क्षण आए हैं, जिनकी टीस उसके मन में बनी हुई है
(ग) मनुष्य को अपनी चोट की याद आ गई है
(घ) मनुष्य अपनी चोट की परवाह नहीं करता, इसलिए उसका घाव हरा हो गया है

V. 'आलोक' शब्द का पर्यायवाची शब्द है
(क) प्रकाश (ख) ध्वांत
(ग) तमिस्रा (घ) अवयव

काव्यांश 19

आज जीत की रात
पहरुए, सावधान रहना,
खुले देश के द्वार
अचल दीपक समान रहना।
प्रथम चरण है नए स्वर्ग का
है मंजिल का छोर
इस मन-मंथन से उठ आई
पहली रतन हिलोर
अभी शेष है पूरी होना
जीवन मुक्ता डोर
क्योंकि नहीं मिट पाई दु:ख की
विगत साँवली कोर
ले युग की पतवार

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

बने अंबुधि महान रहना
पहरुए सावधान रहना
ऊँची हुई मशाल हमारी
आगे कठिन डगर है
शत्रु हट गया, लेकिन उसकी
छायाओं का डर है
शोषण से मृत है समाज
कमज़ोर हमारा घर है
किंतु आ रही नई ज़िंदगी
यह विश्वास अमर है।
जन-गंगा में ज्वार
लहर तुम प्रवाहमान रहना
पहरुए, सावधान रहना।

I. प्रस्तुत पंक्तियाँ जिस सुखद अवसर की ओर संकेत कर रही हैं, वह है

(क) 26 जनवरी, 1952 का दिन
(ख) 15 अगस्त, 1947 का दिन
(ग) 15 अगस्त, 1940 का दिन
(घ) 26 जनवरी, 1956 का दिन

II. कवि 'पहरुए' कह रहा है

(क) पहरा देने वालों को
(ख) पहर में जागने वालों को
(ग) देश की जनता को
(घ) देश की स्वतंत्रता की परवाह न करने वालों को

III. 'शत्रु हट गया, लेकिन उसकी छायाओं का डर है' द्वारा कवि को लगता है कि

(क) एक शत्रु तो चला गया, किंतु कई और शत्रु (जैसे–पाकिस्तान) पैदा हो गए हैं
(ख) शत्रु की छाया अधिक डरा रही है
(ग) छायाएँ हमेशा डराती हैं
(घ) छायाओं से हमें नहीं डरना चाहिए

IV. 'शोषण से मृत है समाज, कमज़ोर हमारा घर है' पंक्ति में कवि कहना चाहता है कि

(क) हमारे सामने चुनौतियाँ हैं
(ख) हम खुशी मनाना नहीं रोकें
(ग) हम अधिक खुशी न मनाएँ
(घ) हम खुशी तनिक भी न मनाएँ

V. 'अंबुधि' शब्द का अर्थ है

(क) पानी (ख) आकाश
(ग) अमर (घ) समुद्र

काव्यांश 20

हारा हूँ सौ बार
गुनाहों से लड़-लड़कर
लेकिन बारंबार लड़ा हूँ
मैं उठ-उठकर
इससे मेरा हर गुनाह भी मुझसे हारा
मैंने अपने जीवन को इस तरह उबारा
डूबा हूँ हर रोज़
किनारे तक आ-आकर
लेकिन मैं हर रोज़ उगा हूँ
जैसे दिनकर
इससे मेरी असफलता भी मुझसे हारी
मैंने अपनी सुंदरता इस तरह सँवारी

I. कवि गुनाहों से सौ बार हारा है, लेकिन वह लड़ा है

(क) गिर-गिरकर (ख) उठ-उठकर
(ग) भाग-भागकर (घ) छिप-छिपकर

II. कवि ने अपनी असफलताओं को पराजित किया है

(क) गुनाहों से लड़कर
(ख) घायल होकर
(ग) विजय की कामना करके
(घ) अनाचार का सामना करके

III. 'डूबा हूँ हर रोज़ किनारे तक आ-आकर' का अर्थ है कि कवि

(क) प्रतिदिन किनारे आकर डूब गया है
(ख) वह तैरना नहीं जानता
(ग) सफलताओं के समीप आकर भी असफल हुआ है
(घ) असफलताओं से नहीं घबराता

IV. 'मैंने अपनी सुंदरता इस तरह सँवारी' पंक्ति द्वारा कवि के व्यक्तित्व की इस विशेषता का पता चलता है कि उसने विजय प्राप्त की है

(क) अपनी सुंदरता को नष्ट करके
(ख) अपनी सुंदरता का ध्यान रखकर
(ग) अपनी सुंदरता को सँवारकर
(घ) हार न मानकर, लगातार संघर्ष करते हुए

V. प्रस्तुत काव्यांश से कवि का क्या आशय है?

(क) मनुष्य को असफलताएँ देखकर घबराना नहीं चाहिए
(ख) मनुष्य को सफलताओं पर गर्व करना चाहिए
(ग) मनुष्य को असफलताओं से मुँह मोड़ लेना चाहिए
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

काव्यांश 21

जय बोलो उस धीरव्रती की, जिसने सोता देश जगाया
जिसने मिट्टी के पुतलों को वीरों का बाना पहनाया।
जिसने आज़ादी लेने की एक निराली राह निकाली
और स्वयं उस पर चलने में जिसने अपना शीश चढ़ाया।
घृणा मिटाने को दुनिया से लिखा लहू से जिसने अपने
"जो कि तुम्हारे हित विष घोले, तुम उसके हित अमृत घोलो।"
कहीं बेड़ियाँ औ हथकड़ियाँ, हर्ष मनाओ, मंगल गाओ
किंतु यहाँ पर लक्ष्य नहीं है, आगे पथ पर पाँव बढ़ाओ।
आज़ादी वह मूर्ति नहीं है जो बैठी रहती मंदिर में
उसकी पूजा करनी है तो नक्षत्रों से होड़ लगाओ।
हल्का फूल नहीं आज़ादी, वह है भारी ज़िम्मेदारी
उसे उठाने को कंधों के, भुजदंडों के, बल को तोलो।

I. 'सोता देश जगाया' से क्या आशय है?
(क) नास्तिकों को आस्तिक बनाया
(ख) अधार्मिकों को धार्मिक बनाया
(ग) नींद से उठाकर काम पर लगाया
(घ) परतंत्र देश को स्वतंत्रता की प्रेरणा दी

II. प्रस्तुत कविता किसे केंद्र में रखकर लिखी गई है?
(क) नेहरू को (ख) सुभाषचंद्र बोस को
(ग) महात्मा गांधी को (घ) सरदार पटेल को

III. 'मिट्टी के पुतलों' से क्या तात्पर्य है?
(क) मूर्ख व्यक्तियों (ख) सामान्य सैनिकों
(ग) सीधे-सरल सामान्य लोग (घ) अशक्त लोगों

IV. 'अमृत' शब्द का पर्यायवाची शब्द निम्न में से कौन है?
(क) जलज (ख) पयोधर
(ग) मधुरस (घ) अमिय

V. 'हल्का फूल नहीं आजादी' से कवि का क्या आशय है?
(क) आजादी एक हल्के फूल की तरह है
(ख) आजादी पाना कोई मुश्किल कार्य नहीं है
(ग) आजादी के लिए मृत्यु को गले लगाना पड़ता है
(घ) आजादी आसानी से नहीं मिलती

काव्यांश 22

क्या कुटिल व्यंग्य! दीनता वेदना से अधीर,
आशा से जिनका नाम रात-दिन जपती है,
दिल्ली के वे देवता रोज कहते जाते,
'कुछ और धरो धीरज, किस्मत अब छपती है।'
किस्मतें रोज छप रहीं, मगर जलधार कहाँ?
प्यासी हरियाली सूख रही है खेतों में,
निर्धन का धन पी रहे लोभ के प्रेत छिपे,
पानी विलीन होता जाता है रेतों में।
हिल रहा देश कुत्सा के जिन आघातों से,
वे नाद तुम्हें ही नहीं सुनाई पड़ते हैं?
निर्माणों के प्रहरियो! तुम्हें ही चोरों के काले
चेहरे क्या नहीं दिखाई पड़ते हैं?
तो होश करो, दिल्ली के देवो, होश करो,
सब दिन तो यह मोहिनी न चलने वाली है,
होती जाती हैं गर्म दिशाओं की साँसें,
मिट्टी फिर कोई आग उगलने वाली है।

I. गरीबों के प्रति कुटिल व्यंग्य क्या है?
(क) धीरज रखने का अनुरोध
(ख) भाग्य पलटने का आश्वासन
(ग) कुछ और काम करने का आग्रह
(घ) वेदना और अधीरता

II. "दिल्ली के वे देवता"–कौन हैं?
(क) सरकारी कर्मचारी
(ख) शक्तिशाली शासक
(ग) बड़े व्यापारी
(घ) प्रभावशाली लोग

III. कौन-सी पंक्ति परिवर्तन होने की चेतावनी दे रही है?
(क) और धरो धीरज, किस्मत अब छपती है
(ख) पानी विलीन होता जाता है रेतों में
(ग) तो होश करो दिल्ली के देवो
(घ) मिट्टी फिर कोई आग उगलने वाली है

IV. "पानी विलीन होता जाता है रेतों में"–कथन का आशय है
(क) सिंचाई नहीं हो पाती
(ख) वर्षा पर्याप्त नहीं होती
(ग) गरीबों तक सुविधाएँ नहीं पहुँचती
(घ) रेत में खेती नहीं हो सकती

V. निर्माण के प्रहरी अनदेखी करते हैं
(क) वैभवशाली लोगों की
(ख) दिल्ली के देवो की
(ग) हरे भरे खेतों की
(घ) चोरों और भ्रष्टाचारियों की

काव्यांश 23

वैराग्य छोड़ बाँहों की विभा सँभालो
चट्टानों की छाती से दूध निकालो।
है रुकी जहाँ भी धार शिलाएँ तोड़ो,
पीयूष चंद्रमाओं को पकड़ निचोड़ो

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

चढ़ तुंग शैल शिखरों पर सोम पियो रे।
योगियों नहीं, विजयी के सदृश जियो रे।
छोड़ो मत अपनी आन, सीस कट जाए,
मत झुको अनय पर, भले व्योम फट जाए
दो बार नहीं यमराज कंठ धरता है,
मरता है जो, एक ही बार मरता है।
तुम स्वयं मरण के मुख पर चरण धरो रे।
जीना हो तो मरने से नहीं डरो रे।
स्वातंत्र्य जाति की लगन व्यक्ति की धुन है,
बाहरी वस्तु यह नहीं, भीतरी गुण है।
नत हुए बिना जो अशनि-घात सहती है,
स्वाधीन जगत् में वही जाति रहती है।
वीरत्व छोड़ पर का मत चरण गहो रे।

I. कवि भारतीय युवकों को ऐसा जीवन जीने को कहता है, जो
(क) कायरों जैसा न हो
(ख) योगियों जैसा नहीं, पराक्रमी वीरों जैसा हो
(ग) केवल बात करने वाले बुद्धिजीवी जैसा न हो
(घ) व्यर्थ में समय नष्ट न करता हो

II. कवि कहता है कि मनुष्य को उन परिस्थितियों में मृत्यु की चिंता नहीं करनी चाहिए, जब
(क) कोई युद्ध करने पर आमादा हो
(ख) कोई निरीह पशुओं पर अत्याचार कर रहा हो
(ग) कोई असामाजिक कार्य कर रहा हो
(घ) उसकी आन अर्थात् इज़्ज़त दाँव पर लगी हो

III. कवि द्वारा इस कविता को लिखने का कारण हो सकता है
(क) देश को स्वाधीन कराने के लिए स्वयं का बलिदान करने से भी न चूकना
(ख) देश की समस्याओं से युवाओं को रूबरू कराना
(ग) महिलाओं की इज़्ज़त बचाने के लिए गुहार लगाना
(घ) वृद्धों को समाज में उनका उचित स्थान दिलवाना

IV. 'नत हुए बिना जो अशनि-घात सहती है, स्वाधीन जगत् में वही जाति रहती है।' का अर्थ है
(क) संसार में केवल वे ही जीत सकते हैं, जो आंदोलन करने को तैयार हों
(ख) संसार में केवल वही जाति स्वाधीनतापूर्वक जीवित रह पाती है, जो तलवारों की चोट का सामना करने पर भी हार नहीं मानती
(ग) संसार में वे ही जीत सकते हैं, जो महिलाओं का सम्मान करने को तैयार हों
(घ) संसार में वे ही जीत सकते हैं, जो जीतने का साहस रखते हों

V. इस कविता का मूल स्वर है
(क) हमें अपने सम्मान की चिंता करनी है
(ख) हमें देश की उन्नति के लिए स्वयं का बलिदान करने से भी नहीं चूकना है
(ग) हमें हर हाल में अपनी भारत माता को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त कराना है
(घ) हमें प्रकृति से छेड़छाड़ करने वालों को सबक सिखाना है

काव्यांश 24

कोलाहल हो, या सन्नाटा, कविता सदा सृजन करती है,
जब भी आँसू हुआ पराजित, कविता सदा जंग लड़ती है।
जब भी कर्ता हुआ अकर्ता, कविता ने जीना सिखलाया
यात्राएँ जब मौन हो गईं कविता ने चलना सिखलाया।
जब भी तम का जुल्म चढ़ा है, कविता नया सूर्य गढ़ती है,
जब गीतों की फसलें लुटतीं शीलहरण होता कलियों का,
शब्दहीन जब हुई चेतना तब-तब चैन लुटा गलियों का।
जब कुर्सी का कंस गरजता, कविता स्वयं कृष्ण बनती है।
अपने भी हो गए पराए, यूँ झूठे अनुबंध हो गए
घर में ही वनवास हो रहा यूँ गूँगे संबंध हो गए।

I. कविता को सृजनात्मक कहा गया है, क्योंकि कविता
(क) हर परिस्थिति में सृजक की भूमिका निभाती है
(ख) गुणों की सराहना करती है
(ग) मौन यात्रा कराती है
(घ) कवि का विश्वास दृढ़ करती है

II. 'कविता सदा जंग लड़ती है' का भाव है
(क) कविता में हारे हुए को सांत्वना देने की क्षमता है
(ख) कविता संघर्ष की प्रेरणा देती है
(ग) कविता चुनौती स्वीकार करने को बाध्य करती है
(घ) कविता आनंद देती है

III. कविता जीना कब सिखाती है?
(क) जब कर्मठ अकर्मण्य हो जाता है
(ख) जब लोग मौन साध लेते हैं
(ग) जब लोग हार जाते हैं
(घ) जब लोग संन्यास लेने की सोचने लगते हैं

IV. जब निराशा और अंधकार पाँव पसारता है तब प्रेरणा कहाँ से मिलती है?
(क) स्वयं से (ख) समस्याओं से
(ग) लोगों से (घ) कविता से

V. पराजित शब्द में 'इत' है
(क) उपसर्ग (ख) संधि
(ग) प्रत्यय (घ) समास

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

काव्यांश 25

मैं हूँ उनके साथ खड़ी जो
सीधी रखते अपनी रीढ़।
कभी नहीं जो तज सकते हैं
अपना न्यायोचित अधिकार,
कभी नहीं जो सह सकते हैं
शीश नवाकर अत्याचार,
एक अकेले हों या उनके
साथ खड़ी हो भारी भीड़;
मैं हूँ उनके साथ खड़ी जो
सीधी रखते अपनी रीढ़।
निर्भय होकर घोषित करते
जो अपने उद्‌गार-विचार
जिनकी जिह्वा पर होता है
उनके अंतर का अंगार,
नहीं जिन्हें चुप कर सकती है
आततायियों की शमशीर;
मैं हूँ उनके साथ खड़ी जो
सीधी रखते अपनी रीढ़।
नहीं झुका करते जो दुनिया
से करने को समझौता,
ऊँचे से ऊँचे सपनों को
देते रहते जो न्योता,
दूर देखती जिनकी पैनी आँख भविष्यत् का तम चीर;
मैं हूँ उनके साथ खड़ी जो
सीधी रखते अपनी रीढ़।

I. रचनाकार किस तरह के लोगों को अपना समर्थन करता है?
(क) सत्ता पर नियंत्रण रखने वालों को
(ख) अपनी रीढ़ सीधी रखने वाले अर्थात् स्वाभिमानी लोगों को
(ग) अवसरवादी एवं लालची लोगों को
(घ) मोकापरस्त लोगों का

II. काव्यांश में प्रयुक्त अंतर का अंगार से क्या तात्पर्य है?
(क) किसी से दूरी के कारण उत्पन्न वैमनस्यता
(ख) भौतिक लाभों से वंचित रहने के कारण उत्पन्न
(ग) अपने हृदय की आग
(घ) उपरोक्त सभी

III. अपनी रीढ़ सीधी रखने वाले अर्थात् स्वाभिमानी एवं कर्मठ लोग निम्न में से क्या नहीं करते हैं?
(क) अत्याचार को सहन
(ख) न्यायोचित अधिकार की माँग
(ग) सत्य का सामना
(घ) ऊँचे सपने यानी महान लक्ष्यों को निमंत्रित

IV. काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'अत्याचार' में मौजूद उपसर्ग को चिह्नित करें।
(क) अ (ख) अत्
(ग) अत्य (घ) अति

V. 'दूर देखती जिनकी पैनी आँख भविष्यत् का तम चीर' पंक्ति से क्या आशय है?
(क) जो व्यक्ति भविष्य के बारे में पहले ही अनुमान लगा लेते हैं
(ख) जो व्यक्ति हमेशा भविष्य के बारे में ही सोचते रहते हैं
(ग) जो व्यक्ति कभी भविष्य के बारे में नहीं सोचते
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

काव्यांश 26

शीश पर मंगल-कलश रख
भूलकर जन के सभी दु:ख
चाहते हो तो मना लो जन्म-दिन भूखे वतन का।
जो उदासी है हृदय पर,
वह उभर आती समय पर,
पेट की रोटी जुड़ाओ,
रेशमी झंडा उड़ाओ,
ध्यान तो रखो मगर उस अधफटे नंगे बदन का।
तन कहीं पर, मन कहीं पर,
धन कहीं, निर्धन कहीं पर,
फूल की ऐसी विदाई,
शूल को आती रुलाई
आँधियों के साथ जैसे हो रहा सौदा चमन का।
आग ठंडी हो, गरम हो,
तोड़ देती है, मरम को,
क्रांति है आनी किसी दिन,
आदमी घड़ियाँ रहा गिन,
राख कर देता सभी कुछ अधजला दीपक भवन का
मना लो जन्म-दिन भूखे वतन का।

I. देश की स्वतंत्रता के मांगलिक उत्सव शोभाहीन होते हैं यदि
(क) देश की जनता दु:खी और भूखी है
(ख) राष्ट्र का जनसमुदाय निर्धन है
(ग) मुल्क के अधिकांश लोग परेशान हैं
(घ) पूरे राज्य का भविष्य अंधकारमय है

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

II. देश के शासकों को कवि का संबोधन है

(क) भूखे को भोजन और नंगे को वस्त्र देने के लिए
(ख) लोगों की उदासी और कष्ट-निवारण के लिए
(ग) समय की गति और परिस्थितियों की विषमता समझने के लिए
(घ) राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने के लिए

III. 'आँधियों के साथ जैसे हो रहा सौदा चमन का' कथन का आशय है

(क) आँधियों के झटकों को झेलना उपवन की विवशता हो गई है
(ख) देश की निरीह जनता कुशासन को सहने की अभ्यस्त हो गई है
(ग) देश की जनता दु:खों और आपदाओं से समझौता कर रही है
(घ) देश का जनसमुदाय कठिनाइयों और कष्टों को सह रहा है

IV. 'आग ठंडी हो, गरम हो' का प्रतीकार्थ है

(क) क्रांति शिथिल हो या उग्र
(ख) आक्रोश धीमा हो या तीव्र
(ग) क्रोध मंद हो या घातक
(घ) हिंसा सीमित हो या असीमित

V. 'अधजला दीपक भवन का' कथन का आशय है

(क) क्रोधी व्यक्ति (ख) निर्धन मनुष्य
(ग) भूखा इंसान (घ) व्यथित प्राणी

काव्यांश 27

जब बचपन तुम्हारी गोद में
आने से कतराने लगे,
जब माँ की कोख से झाँकती जिंदगी
बाहर आने से घबराने लगे,
समझो कुछ गलत है।
जब तलवारें फूलों पर, जोर आजमाने लगें
जब मासूम आँखों में खौफ़ नजर आने लगे
समझो कुछ गलत है।
जब किलकारियाँ सहम जाएँ
जब तोतली बोलियाँ, खामोश हो जाएँ, समझो ....
कुछ नहीं, बहुत कुछ गलत है।
क्योंकि जोर से बारिश होनी चाहिए थी,
पूरी दुनिया में, हर जगह, टपकने चाहिए थे आँसू,
रोना चाहिए था ऊपर वाले को, आसमाँ से फूट-फूट कर,
शर्म से झुकनी चाहिए थी इंसानी सभ्यता
की गर्दनें, शोक का नहीं, सोच का वक्त है
मातम नहीं, सवालों का वक्त है
अगर इसके बाद भी सर उठा कर
खड़ा हो सकता है इंसान
समझो कि बहुत कुछ गलत है।

I. माँ की कोख से झाँकती जिंदगी को घबराहट क्यों हो सकती है?

(क) उसे बाहर की असुरक्षा का आभास हो रहा है
(ख) उसे प्रदूषण का डर सता रहा है
(ग) उसे माँ ने बाहर की वास्तविकता बताई है
(घ) बाहर का मौसम अनुकूल नहीं है

II. जब तलवारें फूलों पर जोर आजमाने लगें, जब मासूम आँखों में खौफ़ नज़र आने लगे-का तात्पर्य है

(क) जब मासूमों पर अत्याचार होने लगे
(ख) मानव अपने स्वार्थ के लिए उद्यान उजाड़ने लगे
(ग) जब मासूम बच्चों को भय के बिना रहना पड़े
(घ) जब मासूम आपस में लड़ने लगें

III. कवि के अनुसार बहुत गलत कब है?

(क) जब ओस तलवार की नोंक पर गिरे
(ख) जब मासूम सहम जाएँ
(ग) जब बचपन समाप्ति की कगार पर हो
(घ) जब किलकारियों की गूँज खामोश हो जाए

IV. कुछ भी गलत नहीं है, यदि

(क) बचपन गोद में आने लगे
(ख) बच्चों पर अत्याचार होने लगे
(ग) बाल श्रम बढ़ जाए
(घ) भ्रूण हत्या होने लगे

V. कवि के अनुसार अभी किसका वक्त है?

(क) सोच-विचार का (ख) दु:ख मनाने का
(ग) उत्सव मनाने का (घ) मासूमों का

काव्यांश 28

दो में से क्या तुम्हें चाहिए, कलम या कि तलवार?
मन में ऊँचे भाव कि तन में शक्ति अजेय अपार!
कलम देश की बड़ी शक्ति है, भाव जगाने वाली,
दिल ही नहीं, दिमागों में भी आग लगाने वाली।
पैदा करती कलम विचारों के जलते अँगारे,
और प्रज्वलित-प्राण देश क्या कभी मरेगा मारे?
लहू गरम रखने को रखो मन में ज्वलित विचार,
हिंस्र जीव से बचने को चाहिए किंतु तलवार!
एक भेद है और जहाँ निर्भय होते नर-नारी,
कलम उगलती आग, जहाँ अक्षर बनते चिंगारी।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

जहाँ मनुष्यों के भीतर, हर दम जलते हैं शोले,
बाँहों में बिजली होती, होते दिमाग में गोले।
जहाँ लोग पालते लहू में हलाहल की धार,
क्या चिंता यदि वहाँ हाथ में हुई नहीं तलवार।

I. प्रस्तुत काव्यांश में 'कलम' और 'तलवार' को मनुष्य की जिन शक्तियों के लिए प्रयुक्त किया गया है, वे हैं
(क) मन के भाव और शारीरिक बल
(ख) अहिंसा और हिंसा
(ग) मन और शरीर (घ) विद्या और शक्ति

II. कलम को महत्त्वपूर्ण बताए जाने का कारण है
(क) कलम जन भावनाओं को उभारकर व्यापक स्तर पर बेहतर परिवर्तन लाने में समर्थ है
(ख) कलम व्यक्ति को जीवंत रखती है
(ग) कलम के आगे तलवार हार मान लेती है
(घ) तलवार से कलम की भाषा अधिक शक्तिशाली है

III. शस्त्र की शक्ति की आवश्यकता उस स्थिति में नहीं रह जाती
(क) जब हिंसक जीव शेष न रहें
(ख) जब कोई भी शत्रु शेष न रहे
(ग) जब लोगों के मन और विचारों में आग लगी हो
(घ) जब लोग अहिंसा को अपना लें

IV. "जहाँ लोग पालते लहू में हलाहल की धार", पंक्ति में 'हलाहल' का अर्थ है
(क) विष (ख) रक्त
(ग) व्याधि (घ) परम शक्ति

V. "कलम उगलती आग, जहाँ अक्षर बनत चिंगारी।" का आशय है
(क) कलम द्वारा पृष्ठों पर आग रूपी अक्षर बनते हैं
(ख) कलम से वीरतापूर्ण विचारों का निर्माण होता है
(ग) कलम युद्ध को न्यौता देती है
(घ) कलम वीरों का साहस बढ़ाती है

काव्यांश 29

जिस राम के गुण आप गाते हैं
जिस अर्जुन पर आप मुग्ध हैं
बताओ तो दोस्तों!
उनके जो-जो चित्र
आपकी आस्था और विश्वास के हैं
वे राजमहलों के हैं
या वनवास के हैं?
मित्रों!
जब स्वयं रामचंद्र
राजमहलों की रेशमी जूतियाँ उतारकर
नंगे पाँव वन में पधारे थे
तभी से वे महिमावान हो गए
राजकुमार तो थे ही
अब वे भगवान हो गए।
जटाधारी राम हों
या वन-वन भटकते पांडव
सबके गौरवशाली चरित्र वन के हैं
ताड़का का वध हो
या जटायु का संस्कार
केवट का मिलन हो
या शबरी से प्यार
भरत से मिलन का हेतु हो
या लंका का सेतु हो
सब वन के ही शृंगार हैं
राम के चौदह वर्ष हों
या पांडवों के तेरह वर्ष
दोनों ने महिमा की पूँजी
वन से ही उगाही थी।
सोने की लंका वनवासी राम ने
ही ढहाई थी
जुए की खाई में गिरे पांडवों ने
दुर्योधन की जंघा तोड़ने की
शक्ति वनवास से ही पाई थी।

I. यहाँ 'रेशमी जूतियाँ' और 'नंगे पाँव' किन स्थितियों के परिचायक हैं?
(क) राजा और रंक के (ख) सुख और कष्ट के
(ग) अमीरी और गरीबी के (घ) राम और पांडव के

II. किस घटना ने रामचंद्र को राजकुमार से भगवान बना दिया?
(क) लंका पर सेतु निर्माण
(ख) सोने की लंका ढहाना
(ग) राज्य त्यागकर वन प्रस्थान
(घ) वन में नंगे पाँव चलना

III. काव्यांश के अनुसार, महापुरुषों का चरित्र गौरवशाली कहाँ हुआ है?
(क) राजमहलों के विलासितापूर्ण जीवन में रहकर
(ख) गुरुकुलों में अनुशासित जीवन जीकर
(ग) राजमहलों से बाहर किसी के आश्रय में रहकर
(घ) वन के संघर्षपूर्ण जीवन में रहकर

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

IV. इस कविता का संदेश है
(क) वनवास ही मनुष्य को महान् बनाता है
(ख) बड़ी कठिनाइयों का सामना करके ही मनुष्य महान् बनता है
(ग) वनों का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है
(घ) राजमहलों का जीवन हमें कमज़ोर करता है

V. प्रस्तुत कविता में किसके महत्त्व को उजागर किया गया है?
(क) वनवास के संघर्षपूर्ण जीवन को
(ख) राम और पांडव के
(ग) जटायु और केवट के
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

काव्यांश 30

एक दिन तने ने भी कहा था,
जड़?
जड़ तो जड़ ही है,
जीवन से सदा डरी रही है,
और यही है उसका सारा इतिहास
कि ज़मीन में मुँह गड़ाए पड़ी रही है;
लेकिन मैं ज़मीन से ऊपर उठा,
बाहर निकला, बढ़ा हूँ
इसी से तो तना हूँ
एक दिन डालों ने भी कहा था
तना?
किस बात पर है तना?
जहाँ बिठा दिया गया था वहीं पर है बना,
प्रगतिशील जगत में तिल भर नहीं डोला है,
खाया है, मोटाया है, सहलाया चोला है,
लेकिन हम तने से फूटीं,
दिशा-दिशा में गईं
ऊपर उठीं, नीचे आईं,
हर हवा के लिए ढाल बनीं, लहराईं
इसी से तो डाल कहलाईं
एक दिन पत्तियों ने भी कहा था,
डाल?
डाल में क्या है कमाल?
माना वह झूमी है, झुकी, डोली है
ध्वनि प्रधान दुनिया में
एक शब्द भी वह कभी बोली है?
लेकिन हम हर-हर स्वर करती हैं,
मर्मर स्वर मर्म भरा भरती हैं
नूतन हर वर्ष हुई,
पतझर में झर
बहार-फूट फिर छहरती हैं,
विथकित-चित्त पंथी का
शाप-ताप हरती हैं।

I. तने ने जड़ को निर्जीव कहा, क्योंकि
(क) वह किसी काम नहीं आती
(ख) वह ज़मीन के नीचे अँधेरे में पड़ी रहती है
(ग) वह स्थिर है
(घ) इसमें जान नहीं होती

II. डाल ने अपनी क्या सार्थकता बताई है?
(क) उस पर पत्ते हैं
(ख) डालियाँ संख्या में बहुत अधिक होती हैं
(ग) गतिशील होती है
(घ) पक्षी घर बना सकते हैं

III. पत्तियाँ डाल की किस कमी की ओर संकेत करती हैं?
(क) डाल हिलने पर ध्वनि नहीं करती
(ख) डाल हिलती-डुलती नहीं
(ग) डाल किसी काम नहीं आती
(घ) डाल किसी का सहारा नहीं बनती

IV. 'पंथी' का समानार्थी शब्द है
(क) पंथ (ख) राहगीर
(ग) रास्ता (घ) पंख

V. प्रस्तुत काव्यांश का सर्वाधिक उचित शीर्षक लिखिए।
(क) तने की कहानी (ख) डालियों का झूमना
(ग) जड़ की ज़बानी (घ) सहभागिता

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

व्याख्या सहित उत्तर

1. I. *(घ)* **गाँव के बच्चों की दयनीय दशा पर** प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने गाँव के बच्चों की दयनीय दशा को चित्रित करते हुए स्पष्ट किया है कि गाँव में न तो पर्याप्त चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध हैं और न ही शैक्षिक सुविधाओं की उपलब्धता, जिसके कारण यहाँ के बच्चों की स्थिति अत्यंत शोचनीय है।

II. *(ख)* **गाँव में शिशु जन्म हेतु पर्याप्त दवाइयाँ नहीं हैं** दूसरे पद में कवि ने स्पष्टतः कहा है कि गाँवों में न तो चिकित्सा सुविधाएँ हैं और न ही पर्याप्त दवाइयाँ हैं। परिणामतः बच्चों के जन्म के समय काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

III. *(क)* **कुपोषित, खिन्न तथा अशिक्षित** प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने गाँव के बच्चों की स्थिति का वर्णन करते हुए कहा है कि वे चिकित्सा सुविधाएँ न होने के कारण विकलांग तथा शारीरिक रूप से अत्यंत कमजोर व अस्वस्थ हैं, जिसके कारण वे मानसिक रूप से उदास तथा चिंतित रहते हैं। साथ ही शैक्षिक संस्थानों की अनुपलब्धता के कारण वे अशिक्षित ही रह जाते हैं।

IV. *(ख)* **वे बच्चों की दशा की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं** प्रस्तुत पद्यांश में कवि गाँवों के बच्चों की दयनीय दशा की ओर समाज का ध्यान आकर्षित करना है ताकि गाँवों के बच्चों को भी मूलभूत सुख-सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा सकें और कोई भी बच्चा स्वास्थ्य व शैक्षिक सुविधाओं से वंचित न रहे।

V. *(ग)* **घास तथा पौधों की तरह पैदा हो रहे हैं तथा मर रहे हैं** प्रस्तुत पंक्ति का अर्थ यह है कि मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध न होने के कारण बच्चे घास तथा पौधों की भाँति पैदा होकर जीवन के क्षणों को पूरा करते हुए अंततः मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं। उन्हें अपने व्यक्तित्व के विकास हेतु पर्याप्त अवसर प्रदान नहीं हो पाते।

2. I. *(ख)* **प्रत्येक परिस्थिति में कार्य करने की प्रेरणा देना** प्रस्तुत पद्यांश का मूल उद्देश्य मनुष्य को प्रत्येक परिस्थिति में कार्य करने की प्रेरणा देना अथवा आगे बढ़ने हेतु प्रोत्साहित करना है कवि कहता है कि प्रतिकूल परिस्थितियों से घबराना नहीं चाहिए, अपितु निडर होकर उनका सामना करने से ही लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

II. *(ग)* **जीवन संसाधनों के लिए यथार्थ में रहकर प्रयत्न करना होगा** प्रस्तुत पंक्ति का मूल भाव यह है कि मात्र कल्पना के बल पर निर्वाह के लिए आवश्यक संसाधनों को प्राप्त नहीं किया जा सकता। जीवन संसाधनों के लिए परिश्रम एवं साहस द्वारा निरंतर प्रयत्न करते रहना चाहिए।

III. *(क)* **यदि तुम जीवन की कष्टतम परिस्थिति झेल लोगे, तो जीवन तुम्हारे बलिदान की प्रशंसा करेगा** प्रस्तुत पंक्ति का अर्थ यह है कि यदि हम जीवन की प्रत्येक कठिन परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए निरंतर जीवन पथ पर अग्रसर रहें तो अंततः हमें वांछित परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। वस्तुतः जीवन की कष्टतम परिस्थितियों का दृढ़तापूर्वक सामना करने में ही जीवन की सार्थकता है।

IV. *(ग)* **अपने हाल की परवाह न करते हुए सकारात्मक भाव से कार्य करते रहना** समय को गतिशील करने के लिए प्रत्येक परिस्थिति में परिणाम की चिंता न करते हुए सकारात्मक भाव से कार्य करते रहना चाहिए, तभी व्यक्ति वांछित व सकारात्मक परिणाम प्राप्त कर सकता है।

V. *(ग)* **वे उसे लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग से विचलित कर सकते हैं** 'फूलों की ओट व सुरभि के घेरे' व्यक्ति को निष्क्रिय बना सकते हैं। ये व्यक्ति में आलसी व विलासी व्यक्तित्व का निर्माण कर उसे लक्ष्य मार्ग से विमुख कर सकते हैं।

3. I. *(घ)* **मार्ग की बाधाओं को स्वीकार करके चलते हैं** पथ के कंटक को सुमन मानने से आशय यह है कि हम मार्ग की बाधाओं को स्वीकार करके चलते हैं मार्ग में आने वाले बाधाओं को भी हँस कर सह लेते हैं।

II. *(ख)* **बाधाओं का** 'कंटक' बाधाओं का प्रतीक है। जीवन के मार्ग में आने वाली बाधाओं को ही कंटक कहा गया है।

III. *(घ)* **उपरोक्त सभी** पथिक वही होता है, जो अपनी डगर पर कभी हार नहीं मानता और निरंतर पथ पर अग्रसर रहता है तथा अपने लक्ष्य के निकट होता है।

IV. *(ख)* **सूर्य की किरणें** अंधेरे को नष्ट कर पृथ्वी को उजाले से सूर्य की किरणें भर देती हैं। सूर्य की किरणों से निकलने वाले प्रकाश से संपूर्ण पृथ्वी का अंधकार नष्ट हो जाता है तथा सर्वत्र उजाला फैल जाता है।

V. *(ख)* **हम हर हालत में विजयी होंगे** 'लक्ष्य प्रेरित बाण हैं हम' पंक्ति का भाव यह है कि हम हर हालत में विजयी होंगे। जिस प्रकार लक्ष्य को साधने वाला बाण ठीक निशाने पर लगता है उसी प्रकार हम भी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अवश्य विजयी होंगे।

4. I. *(घ)* **समुद्र के हृदय पर** लहरे समुद्र के हृदय पर नाचकर मधुर गान करती हैं। समुद्र में उठती लहरों से आने वाली आवाज बहुत मधुर लगती है। एक के बाद एक लहर के आने की कल्पना उनके नाच के रूप में की गई है।

II. *(ख)* **कुसुम + अवलि** 'कुसुमावलि' शब्द का संधि-विच्छेद कुसुम + अवलि होगा यहाँ अ + अ = आ में परिवर्तित होने के कारण दीर्घ स्वर संधि है।

III. *(ग)* **इंद्र धनुषों की शोभा को पीछे छोड़ देना** 'सुरचाप भंग करना' का अर्थ है—इंद्रधनुष की शोभा को पीछे छोड़ना। यहाँ लहरों के संदर्भ में यह बात कही गई है। संध्या के समय लहरों का रूप और भी अधिक सुंदर हो जाता है। उस समय वे इंद्रधनुष की शोभा को भी पीछे छोड़ देती हैं अर्थात् बहुत सुंदर लगती है।

IV. *(क)* **उनके प्राण एक सूत्र में बँधे हुए हैं** कवि ने लहरों की यह विशेषता बताई है कि उनके प्राण एक सूत्र में बँधे हुए हैं। वे समुद्र में एक साथ उठती हैं, एक-सा गिरती हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

V. *(ग)* **आकाश की नीलिमा** 'नीला दुकूल' आकाश की नीलिमा को कहा गया है। समुद्र में उठती लहरों के ऊपर आकाश की नीलिमा दिखाई देती है। इस दृश्य को देखकर ऐसा लगता है जैसे लहरों ने नीले रंग का वस्त्र ओढ़ लिया हो।

5. I. *(क)* **संघर्ष** कवि ने जीवन का सच संघर्ष को माना है। कवि कहता है कि मेरा तुम्हारा सच वास्तव में सच नहीं है असली सच तो निरंतर संघर्ष में है।

II. *(ख)* **समस्याओं से नहीं घबराता** कवि के अनुसार जीत उसी की होती है, जो समस्याओं से नहीं घबराता है बल्कि डटकर उनका सामना करता है तथा संघर्ष करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहता है।

III. *(घ)* **गुलाब** 'कुसुम' शब्द का पर्यायवाची गुलाब नहीं है, जबकि सुमन, प्रसून तथा पुहुप, कुसुम के पर्यायवाची हैं। गुलाब एक फूल का नाम है किंतु फूल का पर्याय नहीं है।

IV. *(घ)* **जो झुक गया, वह मर गया** जो संघर्षों के कारण स्वयं को हारा हुआ मान लेता है अर्थात् उनके आगे झुक जाता है, वह मृत व्यक्ति के समान होता है।

V. *(ख)* **हमें विषम परिस्थितियों में हार नहीं माननी चाहिए** प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहता है कि हमें विषम परिस्थितियों में हार नहीं माननी चाहिए बल्कि उनका सामना करते हुए जीवन के मार्ग में आगे बढ़ना चाहिए।

6. I. *(ख)* **हृदय को बाँटने का** धरती को बाँटने के बाद मनुष्य हृदय को बाँटने का प्रयास कर रहा है। कवि कहता है कि मनुष्य के हृदय को बाँटकर नफरत की दीवार खड़ी करने तथा संहार करने का कार्य मत करो।

II. *(ग)* **कि वह अनाथ है** मनुष्य को यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि वह अनाथ है, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य के नाथ स्वयं परमात्मा हैं। एक-एक मनुष्य से मिलकर यह संसार बनता है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य का अपना महत्त्व है।

III. *(ख)* **जो मानव का उद्धार करता है** काव्यांश के अनुसार धर्म वह है जो मानव का उद्धार करता है, उसे सही मार्ग पर लेकर चलता है। लोगों के मन में नफरत पैदा करने वाला धर्म नहीं होता है।

IV. *(क)* **हमारी वसुधा** प्रस्तुत काव्यांश का उचित शीर्षक हमारी वसुधा हो सकता है, क्योंकि यहाँ हमारी वसुधा यानी धरती के विषय में चर्चा करते हुए उस पर शांत बनाए रखने का संदेश दिया गया है।

V. *(क)* **सब मिल-जुलकर प्यार से रहें** प्रस्तुत काव्यांश में कवि यह समझाना चाहता है कि भले ही पृथ्वी पर अलग-अलग देश, धर्म, जाति के लोग रहते हों, लेकिन सभी को नफरत न करते हुए मिल-जुलकर प्यार से रहना चाहिए।

7. I. *(घ)* **उपरोक्त सभी बातों के लिए लताड़ा है** प्रथम चार पंक्तियों में कवि ने लोगों को राजा या शासक पर आश्रित रहने, जूठे पत्तल चाटने अर्थात् चाटुकारिता करने तथा अलख या अगोचर शक्ति का आश्रय छोड़ने के लिए लताड़ा है। अतः विकल्प (घ) सही उत्तर है।

II. *(ख)* **वह लोगों को उनकी शक्ति का समरण कराना चाहता है** दूसरे पद के माध्यम में कवि लोगों को उनकी शक्ति का स्मरण कराना चाहता है ताकि लोग शक्ति को पहचान कर वह स्वयं आगे बढ़ने का प्रयास करें। किसी दूसरे पर निर्भर न रहें।

III. *(ग)* **तू अखंड भंडार शक्ति का : जाग, अरे निद्रा सम्मोहित** मनुष्य को अपने असीमित बल को पहचानना चाहिए यह अर्थ इस पंक्ति से निकल रहा है तू अखंड भंडार शक्ति का : जाग, अरे निद्रा सम्मोहित।

IV. *(क)* **वह अमीर गरीब का भेद मिटाने में असमर्थ हो गया है** कवि को ईश्वर से यह शिकायत है कि वह अमीर-गरीब का भेद मिटाने में असमर्थ हो गया है। इसीलिए अमीर वर्ग के लिए गरीबों का शोषण करते रहते हैं।

V. *(ख)* **क्रोध + अनल** 'क्रोधानल' का संधि विच्छेद क्रोध + अनल होगा। यहाँ अ + अ = आ में परिवर्तित होने के कारण दीर्घ स्वर संधि है।

8. I. *(ग)* **वहाँ प्रतिदिन नए मकान बन जाते हैं** काव्यांश के आरंभ में ही कवि कहता है कि वह अक्सर अपना रास्ता भूल जाता है, क्योंकि नए बसते इलाकों में रोज़-रोज़ नए मकान बन रहे हैं।

II. (घ) **ज़मीन के खाली टुकड़े के पास से** कवि अपने घर जाने के लिए ज़मीन के खाली टुकड़े के पास से बाएँ मुड़ता है।

III. *(ग)* **कवि के घर के आस-पास नित नए मकान बनते जा रहे हैं**
प्रस्तुत काव्य-पंक्ति का आशय है कि कवि के घर के आस-पास रोज़ नए मकान बन रहे हैं, क्योंकि वह इलाका अभी बसने की प्रक्रिया से गुज़र रहा है।

IV. *(ग)* **उसे लग रहा है कि वह लंबे समय बाद लौटा है** इस काव्य-पंक्ति के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि उसके इलाके में रोज कुछ-न-कुछ नया घटित हो रहा है। उसे देखकर कवि को यह अनुभव होता है कि वह लंबे समय बाद अपने घर लौटा है।

V. *(घ)* **पुनरुक्तिप्रकाश** प्रस्तुत काव्य-पंक्ति में 'नए' शब्द की दो बार आवृत्ति होने के कारण पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।

9. I. *(ग)* **अपना गोत्र बतलाकर नहीं, करतब दिखलाकर यश पाते हैं** प्रस्तुत काव्यांश के अनुसार, संसार में तेजस्वी लोग वही होते हैं जो अपने वंश एवं गोत्र के बल पर नहीं अपितु, अपने गुणों और करतबों के द्वारा यश अर्जित करते हैं।

II. *(घ)* **वीर पुरुष अपना नाम इतिहास में लिखवा ही लेते हैं** वीर पुरुष कभी भी अपने वंश व जाति के कारण हीन भावना में नहीं पड़ते। वे अपने वीरतापूर्ण कार्यों से अपना नाम इतिहास में लिखवा ही लेते हैं।

III. *(ख)* **शील और पौरुष जैसे श्रेष्ठ गुणों से** कर्ण वीरता, भावुकता, दानवीरता, शील, पौरुष आदि श्रेष्ठ गुणों से युक्त महारथी थे।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

IV. *(क)* **जलधारा पर बहती हुई पेटी के पालने में** पैदा होने पर कर्ण को जलधारा पर बहती हुई पेटी के पालने में झुलाया गया था अर्थात् उनके पैदा होने पर उनकी माता ने उन्हें जलधारा में बहा दिया था।

V. *(ग)* **समरशूर, भावुक और दानी** प्रस्तुत काव्यांश में कर्ण को तन से समरशूर, मन से भावुक और स्वभाव से दानी बताया गया है।

10. I. *(ख)* **धर्म पर आधारित नफ़रत की बातें** प्रस्तुत काव्यांश में सांप्रदायिकता का विरोध किया गया है। यहाँ 'मज़हब के शोले' से तात्पर्य धर्म पर आधारित नफ़रत की बातें फैलाने से है।

II. *(ग)* **प्रगतिशील दृष्टिकोण ऐसी बातों को बेतुकी मानता है** इस काव्यांश में कवि कहता है कि आज मज़हब के शोले सुलगाने अर्थात् धर्म के द्वारा नफ़रत फैलाने का मौका नहीं है, क्योंकि आज के आधुनिक युग में इन बातों के लिए कोई स्थान नहीं है। आज का प्रगतिशील दृष्टिकोण ऐसी बातों को बेतुकी मानता है।

III. *(ग)* **समाज को संकुचित दृष्टिकोण से नहीं देखता** प्रजातंत्र का अर्थ होता है-प्रजा का तंत्र। इसमें प्रजा का हित ही सर्वोपरि होता है, फिर चाहे प्रजा का संबंध किसी भी धर्म अथवा जाति से हो। अतः प्रजातंत्र में धर्म को ही सर्वस्व मानकर उसी को प्राथमिकता देना अप्रासंगिक है, क्योंकि वह समाज को संकुचित दृष्टिकोण से नहीं देखता।

IV. *(घ)* **सांप्रदायिकता का विरोध करना** यहाँ कवि कहता है कि हमें मानवता की भलाई एवं खुशहाली के लिए हरियाली फसलें बोना है अर्थात् हमें सांप्रदायिकता का विरोध करना है और अपने देश से सांप्रदायिकता का चिह्न तक मिटा देना है।

V. *(ख)* **अनुप्रास** प्रस्तुत काव्य-पंक्ति में 'ब' वर्ण की आवृत्ति हुई है। अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

11. I. *(क)* **आस-पास घट रही घटनाओं पर ध्यान दो** काव्यांश की प्रथम दो पंक्तियों का अर्थ है कि व्यक्ति को सोते रहने की जगह अपने आस-पास के वातावरण को भी साफ़ एवं स्वच्छ रखना चाहिए। जीवन में सदैव गतिशीलता रहनी चाहिए।

II. *(ग)* **कम-से-कम कुछ तो रचनात्मक कार्य कर लो** कवि कहता है कि स्वयं को गतिशील बनाए रखने के लिए स्वयं को किसी-न-किसी रचनात्मक क्रिया में संलग्न रखो।

III. *(ख)* **मन की खिड़की** प्रस्तुत पंक्ति से रचनाकार का आशय मन के दरवाज़ों को खोलने से है, जिससे उसके भीतर स्वच्छ वायु एवं प्रकाश का आगमन हो सके और व्यक्ति अधिक ऊर्जावान होकर समाज में अपनी सक्रिय भूमिका निभा सके।

IV. *(क)* **अनुप्रास** प्रस्तुत काव्य-पंक्ति में 'द' वर्ण की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।

V. *(ख)* **जीवन में हमेशा सचेत और गतिशील रहना चाहिए** प्रस्तुत काव्यांश का यह भाव है कि मनुष्य को हमेशा जीवन में सतर्क व गतिशील अर्थात् कुछ-न-कुछ करते रहना चाहिए।

12. I. *(ख)* **पुरुष के बंधन से** प्रस्तुत गद्यांश में कवि नारी को पुरुष के बंधन से मुक्त कराना चाहता है ताकि वह स्वतंत्र होकर जी सके।

II. *(ग)* **नारी को सोने के आभूषणों से अलग करना** कवि नारी के आभूषणों को उसके अलंकरण का साधन न मानकर बंधन मानता है। वह नारी को सोने के आभूषणों रूपी बंधनों से मुक्त करना चाहता है।

III. *(घ)* **मानवी, युग को प्रकाश देने वाली के रूप में** कवि नारी को मानवी, युग को प्रकाश देने वाली के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहता है ताकि नारी के नए रूप से नए युग का प्रभाव हो और वह (नारी) अपने कार्यों से समाज को दिशा प्रदान कर सके।

IV. *(ग)* **पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार** 'युग-युग की बर्बर कारा से' पंक्ति में युग शब्द की दो बार आवृत्ति होने के कारण यहाँ पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।

V. *(घ)* **उपरोक्त सभी** कवि नारी को 'मानव' की तरह की सशक्त, मुक्त, प्रतिष्ठित मानवी के रूप में देखना चाहता है। वह चाहता है कि समाज में पुरुषों की तरह ही नारी का भी विशिष्ट स्थान हो।

13. I. (ग) **वह मिट्टी की मूरत बनी आवाज़ नहीं उठाती** प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने भारतीय जनता की तुलना मिट्टी से बनी मूर्तियों से की है। जिस प्रकार मिट्टी की मूर्तियाँ कभी प्रतिकार नहीं करती हैं, उसी प्रकार भारतीय जनता भी सभी अत्याचारों को चुपचाप सहती रहती है।

II. *(घ)* **भारतीय जनता बहुत सीधी है, उसे बहलाना कठिन नहीं है**
इस काव्य-पंक्ति का आशय है कि शासक वर्ग ने भारतीय जनता को बहुत सीधी और भोली-भाली मान लिया है।

III. *(ग)* **क्रांति** कवि का कहना है कि जनता को सीधी-सादी समझकर उसकी उपेक्षा करना सही नहीं है। जब यही जनता क्रोधित हो जाती है तो उसका परिणाम क्रांति के रूप में सामने आता है।

IV. *(क)* **जनता के हाथ में सत्ता सौंपना** 'प्रजा का अभिषेक होने' का तात्पर्य जनता के हाथ में सत्ता सौंपने से है अर्थात् जनता स्वयं अपने शासक का चुनाव करती है।

V. *(क)* **वह देवता जैसा सरल व गुणवान है** कवि ने आम आदमी को 'देवता' कहा है, क्योंकि वह देवता के समान सरल स्वभाव वाला है। उसके आचरण में छल-प्रपंच के लिए कोई स्थान नहीं है।

14. I. *(घ)* **स्वयं मिट्टी खाने तथा अपनी माँ को खिलाने के लिए लाने के कारण** काव्यांश में कहा गया है कि कवयित्री की बेटी कुछ मिट्टी मुँह में खाकर और कुछ मिट्टी अपनी माँ को खिलाने के लिए हाथ में लेकर आई थी।

II. *(ख)* **अपनी बेटी के रूप में** काव्यांश में स्पष्ट किया गया है कि ''पाया मैंने बचपन फिर से, बचपन बेटी बन आया'' अर्थात् कवयित्री जिस बचपन को खोज रही थी, वह बचपन उसकी बेटी के रूप में उसे प्राप्त हुआ।''

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

III. *(ग)* **अपने बचपन को** काव्यांश में कहा गया है कि ''जिसे खोजती थी, बरसों से, अब जाकर उसको पाया। भाग गया था मुझे छोड़कर वह बचपन फिर से आया''।

IV. *(क)* **आँख** काव्यांश में प्रयुक्त 'दृग' शब्द आँख का पर्यायवाची है।

V. *(ग)* **क्योंकि बचपन का जीवन निश्छल और चिंतारहित होता है** कवयित्री अपने बचपन के दिनों को याद कर उसे दोबारा पाना चाहती थी, क्योंकि बचपन का जीवन सरल, निश्छल और चिंतारहित होता है।

15. I. *(क)* **मातृभूमि के प्रति गहन अनुराग** 'जन्मदात्री मिट्टी की गंध' पंक्ति में कवि ने अपनी मातृभूमि के प्रति गहन अनुराग की भावना अभिव्यक्त की है।

II. *(क)* **देशवासियों के सुख-दुःख की सहज अनुभूति** मानवीय संवेदनाओं की पावनी गंगा से कवि का आशय देशवासियों के सुख-दुःख की सहज अनुभूति से है। कवि इन्हें करीब से अनुभव करना चाहता है।

III. *(घ)* **प्राणों का आधार है** कवि के अनुसार, देश की मिट्टी उसके प्राणों का आदि है, मध्य है, अंत है अर्थात् यही उसके जीवन का आधार है।

IV. *(ख)* **निष्प्राण जीवन** 'मात्र साँस लेती खाल' का आशय निष्प्राण जीवन से है। कवि कहता है कि वह ऐसा जीवन नहीं जीना चाहता जो निर्जीव अथवा प्राणहीन हो।

V. *(ख)* **अनुप्रास** प्रस्तुत पंक्ति में 'क' वर्ण की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।

16. I. *(घ)* **विचारों के साथ-साथ सुगंध, प्रकाश, विश्वास और उदासी जैसे सभी भाव** कविता के वर्णन से स्पष्ट है कि विचारों के साथ-साथ सुगंध, प्रकाश, विश्वास और उदासी जैसे सभी भाव एक साथ मन में विद्यमान रहते हैं।

II. *(ग)* **अच्छे एवं सकारात्मक विचार** मन के संदर्भ में सुगंध और प्रकाश से कवि का तात्पर्य अच्छे एवं सकारात्मक विचारों से है।

III. *(ख)* **मन के विचार सही हो जाने का परिणाम सुखकारी होता है** मन के संदर्भ में 'ठिकाने लग जाना' का तात्पर्य है कि मन के विचार सही हो जाने का परिणाम सुखकारी होता है। वास्तव में, सकारात्मक मनोवृत्तियाँ ही हमारे कार्य को रचनात्मक बनाती हैं।

IV. *(क)* **नदी की धारा रुकती नहीं है और इसकी धारा में किसी प्रकार की कमी नहीं आ पाती** नदी के संदर्भ में 'ठिकाने लग जाना' का अर्थ है—नदी का अनवरत एवं अविरल रूप से बहना। ऐसा होने पर नदी की धारा में किसी प्रकार की कमी नहीं आ पाती।

V. *(ग)* **द्वंद्व समास** जिस समस्त-पद के दोनों पद प्रधान हों और दोनों पदों के बीच प्रायः योजक चिन्ह (-) का प्रयोग हो वहाँ द्वंद्व समास होता है।

17. I. *(घ)* **आपस में गले लगते हैं** प्रस्तुत काव्यांश के आरंभ में स्पष्ट किया गया है कि हम एक साथ मिलकर एक-दूसरे के दुःख सुख झेलते हैं, एक-दूसरे को मनाते हैं और आपस में गले लगकर मुसकराते हैं।

II. *(क)* **वेश-भूषा** प्रस्तुत काव्यांश में भूषा का अर्थ वेश-भूषा है। जिस प्रकार भाषा मनुष्य को परस्पर जोड़ती है, उसी प्रकार वेश-भूषा मनुष्यों के बीच अपनत्व का संबंध स्थापित करती है।

III. *(क)* **हम सब मन से जुड़ जाते हैं** कवि कहना चाहता है कि संगीत भी हमें जोड़ने का कार्य करता है अर्थात् संगीत के माध्यम से हम एक-दूसरे के मनोंभावों को समझ लेते हैं और हम सब मन से आपस में जुड़ जाते हैं।

IV. *(घ)* **हम सभी का मान करते हैं**
प्रस्तुत काव्यांश में एक होने के भावों को अजीब कहा गया है, क्योंकि भले ही मनुष्य विभिन्न धर्मों और संप्रदायों के आधार पर बँटा हुआ है, परंतु सभी धर्म उसे दुःख-सुख में साथ रहने का संदेश देते हैं।

V. *(ख)* **अनुप्रास** प्रस्तुत पंक्ति में 'स' वर्ण की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।

18. I. *(ख)* **सुख और शोक, अंधकार और आलोक, मोह और मत्सर तथा शांति और संघर्ष को** कवि ने सुख और शोक, अंधकार और आलोक, मोह और मत्सर तथा शांति और संघर्ष को जीवन का आधार माना है, क्योंकि ये सभी परस्पर द्वंद्वात्मक हैं और जीवन इन्हीं द्वंद्वों से विकसित होता है।

II. *(क)* **जी रहा है** पैदा होने के बाद इंसान इसी उधेड़-बुन में रहता है कि वह जी रहा है और यही काल्पनिक विश्वास उसे जीवित रखता है।

III. *(ग)* **वह जिस ओर अपने पैर बढ़ाएगा, वैसा ही उसका परिणाम होगा** गति और दुर्गति इसीलिए उसके पाँवों में हैं, क्योंकि स्पष्टतः वह जिस ओर अपने कर्मरत् कदम बढ़ाएगा, वैसा ही उसका परिणाम होगा।

IV. *(ख)* **मनुष्य के जीवन में अनेक बुरे क्षण आए हैं, जिनकी टीस उसके मन में बनी हुई है** घावों के हरे होने से कवि का तात्पर्य यह है कि मनुष्य के मन में उसके द्वारा बिताए गए बुरे क्षणों की टीस बनी रहती है।

V. *(क)* **प्रकाश** आलोक का पर्यायवाची शब्द प्रकाश होता है।

19. I. *(ख)* **१५ अगस्त, १९४७ का दिन** प्रस्तुत पंक्तियाँ 15 अगस्त, 1947 के सुखद दिन की ओर संकेत कर रही हैं, क्योंकि हमें इस दिन स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी।

II. *(ग)* **देश की जनता को** यहाँ प्रयुक्त 'पहरुए' शब्द का अभिप्राय प्रहरी से है, जो देश के सभी नागरिक हैं। देश के सभी नागरिकों का कर्तव्य है कि वे देश की स्वतंत्रता की रक्षा करें।

III. *(क)* **एक शत्रु तो चला गया, किंतु कई और शत्रु (जैसे—पाकिस्तान) पैदा हो गए हैं** इस पंक्ति के माध्यम से कवि कहना चाह रहा है कि देश के शत्रु अंग्रेज़ तो देश छोड़कर चले गए, लेकिन जाते-जाते वे 'पाकिस्तान' नामक देश बनाकर लोगों के मन में धार्मिक वितृष्णा के बीज बो गए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

IV. *(क)* **हमारे सामने चुनौतियाँ हैं** कवि कहना चाहता है कि हमारे देश में, भारतीय समाज में अभी भी शोषण विद्यमान है। जिससे हमें निपटना होगा, क्योंकि अभी हमारे सामने अनेक चुनौतियाँ मौजूद हैं।

V. *(घ)* **समुद्र** अंबुधि का अर्थ है—सागर, समुद्र आदि। ये पर्यायवाची शब्द हैं।

20. I. *(ख)* **उठ-उठकर** दिए गए काव्यांश में स्पष्ट किया गया है कि कवि गुनाहों से लड़-लड़कर भले ही सौ बार हारा हो, लेकिन बार-बार वह लड़ने के लिए उठ खड़ा हुआ है।

II. *(क)* **गुनाहों से लड़कर** कवि का कहना है कि उसके बार-बार उठ-उठकर लड़ने के कारण ही उसका हर गुनाह उससे हारा है, पराजित हुआ है, असफल हुआ है।

III. *(ग)* **सफलताओं के समीप आकर भी असफल हुआ है** कवि का तात्पर्य है कि वह हर दिन किनारों तक आ-आकर भी डूब जाता है अर्थात् सफलताओं के समीप आकर भी असफल हुआ है।

IV. *(घ)* **हार न मानकर, लगातार संघर्ष करते हुए** प्रस्तुत पंक्ति में उल्लेखित सुंदरता शब्द के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि उसने कभी हार न मानने वाली प्रवृत्ति के कारण अपने व्यक्तित्व को लगातार संघर्ष करते हुए सँवारा है।

V. *(क)* **मनुष्य को असफलताएँ देखकर घबराना नहीं चाहिए** मनुष्य को चाहिए कि वह जीवन के संघर्षों के सामने कभी न हारे। उनका लगातार मुकाबला करे। उसे असफलताओं से कभी घबराना नहीं चाहिए।

21. I. *(घ)* **परतंत्र देश को स्वतंत्रता की प्रेरणा दी** काव्यांश की पहली पंक्ति में कहा गया है कि धीरव्रती (महात्मा गांधी) ने सोते हुए परतंत्र देश भारत को नींद से जगाया और इसे स्वतंत्रता प्राप्ति का मार्ग दिखाया।

II. *(ग)* **महात्मा गांधी को** काव्यांश में कहा गया है कि 'जय बोलो उस धीरव्रती की' अर्थात् 'धीरव्रती' से तात्पर्य है—धीर (धैर्य) को धारण करने वाला। सभी को ज्ञात है कि 'सत्याग्रह' महात्मा गांधी का लड़ने का हथियार था।

III. *(ग)* **सीधे-सरल सामान्य लोग** काव्यांश में कहा गया है कि धीरव्रती ने ही इस देश के 'मिट्टी के पुतलों' अर्थात् सीधे-सरल सामान्य लोगों को लड़ने के लिए वीरता का बाना पहनाया था।

IV. *(घ)* **अमिय** 'अमृत' का पर्यायवाची शब्द 'अमिय' होता है।

V. *(घ)* **आजादी आसानी से नहीं मिलती** कवि कहता है कि आजादी किसी हल्के फूल की तरह नहीं है। वह आसानी से नहीं मिलती। वह एक बड़ी जिम्मेदारी होती है। उसके लिए कठिन प्रयत्न करना पड़ता है।

22. I. *(क)* **धीरज रखने का अनुरोध** काव्यांश में कवि गरीबों पर कुटिल व्यंग्य करते हुए कहता है कि शोषित वर्ग अपनी वेदना से पीड़ित होकर शोषक वर्ग से आशा करता है कि वे उनकी वेदना को कुछ कम करने में सहयोग करेंगे, किंतु शोषक वर्ग द्वारा उनको धीरज धरने का आश्वासन दिया जाता है।

II. *(ख)* **शक्तिशाली शासक** काव्यांश में कवि ने दो वर्गों के मध्य की स्थिति को वर्णित किया है। अतः दिल्ली के देवता का संबोधन शक्तिशाली वर्ग अर्थात् शोषक वर्ग को दिया गया है।

III. *(घ)* **मिट्टी फिर कोई आग उगलने वाली है।** काव्यांश में कवि ने शोषक वर्ग को संबोधित करते हुए कहा है कि अब तुम्हारी इच्छानुसार कार्य नहीं होगा, क्योंकि शोषित वर्ग परिवर्तन चाहता है और परिवर्तन के लिए वह एकजुट होकर विरोध करने को तत्पर है।

IV. *(ग)* **गरीबों तक सुविधाएँ नहीं पहुँचती** काव्यांश में कहा गया है कि शक्तिशाली लोभी वर्ग, निर्धन व शोषित वर्ग के धन पर नज़र लगाए रहते हैं जिसके कारण निर्धन वर्ग पर्याप्त सुविधाओं को न पाकर अत्यंत ही दयनीय स्थिति में पहुँच जाता है।

V. *(घ)* **चोरों और भ्रष्टाचारियों की** काव्यांश में कवि ने कहा है कि निर्माण के प्रहरियों यानी शोषक वर्ग को ही चोरों के काले चेहरे दिखाई नहीं देते।

23. I. *(ख)* **योगियों जैसा नहीं पराक्रमी वीरों जैसा हो** कवि भारतीय युवकों को योगियों जैसा नहीं अपितु पराक्रमी वीरों जैसा जीवन जीने को कहता है। कवि का स्पष्ट कथन है कि 'योगियों नहीं, विजयी के सदृश जियो रे।

II. *(घ)* **उसकी आन अर्थात् इज़्ज़त दाँव पर लगी हो** कवि कहता है कि जब मनुष्य की आन अर्थात् उसकी इज़्ज़त दाँव पर लगी हो, तो ऐसी परिस्थिति में मृत्यु की चिंता नहीं करनी चाहिए।

III. *(क)* **देश को स्वाधीन कराने के लिए स्वयं का बलिदान करने से भी न चूकना** कवि द्वारा इस कविता को लिखने का कारण देश को स्वाधीन कराने के लिए स्वयं का बलिदान करने से भी न चूकना हो सकता है, क्योंकि कवि के कथन का मूल संदर्भ स्वतंत्रता या स्वाधीनता ही है।

IV. *(ख)* **संसार में केवल वही जाति स्वाधीनतापूर्वक जीवित रह पाती है, जो तलवारों की चोट का सामना करने पर भी हार नहीं मानती** नत होने का अर्थ झुकना है। कवि कहना चाहता है कि संसार में केवल वही जाति स्वाधीनतापूर्वक जीवित रह पाती है, जो तलवारों की चोट का सामना करने पर भी हार नहीं मानती अर्थात् झुकना नहीं जानती।

V. *(ग)* **हमें हर हाल में अपनी भारत माता को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त कराना है** इस कविता का मूल स्वर है कि हमें हर हाल में भारत माता को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त कराना है। वास्तव में, यह कविता स्वाधीनता की पृष्ठभूमि में लिखी गई कविता है।

24. I. *(क)* **हर परिस्थिति में सृजक की भूमिका निभाती है** प्रस्तुत काव्यांश के प्रारंभ में ही स्पष्ट रूप से कहा गया है कि कोलाहल हो या सन्नाटा अर्थात् शांति हो या अशांति कविता प्रत्येक परिस्थिति में सृजक की भूमिका निभाती है।

II. *(ख)* **कविता संघर्ष की प्रेरणा देती है** काव्यांश में कहा गया है कि जब भी व्यक्ति निराश-हताश होकर हार स्वीकार कर लेता है, तब कविता ही उसे संघर्ष करने की प्रेरणा देती है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

III. *(क)* **जब कर्मठ अकर्मण्य हो जाता है** इस काव्यांश में कहा गया है कि जब कर्ता अकर्ता हो जाता है अर्थात् जब कर्मठ व्यक्ति भी कर्महीन बन जाता है, तब कविता उसे जीना सिखाती है और उसे उसके कर्म के प्रति सचेत करती है।

IV. *(घ)* ***कविता से*** जब निराशा का अंधकार चारों ओर फैल जाता है और व्यक्ति का उत्साह क्षीण हो जाता है, तब कविता से ही उसे प्रेरणा मिलती है।

V. *(ग)* **प्रत्यय** पराजित शब्द पराजय में 'इत' प्रत्यय के संयोग से निर्मित हुआ है। इसलिए 'इत' प्रत्यय है।

25. I. *(ख)* **अपनी रीढ़ सीधी रखने वाले अर्थात् स्वाभिमानी लोगों को** प्रस्तुत काव्यांश में रचनाकार का प्रमुख उद्देश्य ही स्वाभिमानी तथा सत्य एवं न्याय के पक्षधर लोगों की महिमा का गुणगान करते हुए उन्हें अपना समर्थन देना है।

II. *(ग)* **अपने हृदय की आग** प्रस्तुत काव्यांश में स्पष्ट किया गया है कि स्वाभिमानी एवं जुझारु लोगों की जिह्वा पर हमेशा उनके हृदय की आग, उनके अंदर का आक्रोश व्याप्त रहता है।

III. *(क)* **अत्याचार को सहन**
प्रस्तुत काव्यांश में स्वाभिमानी एवं कर्मठ लोगों द्वारा लोगों से गलत समझौता नहीं करने के कारण उनकी महिमा का गुणगान किया गया है।

IV. *(घ)* ***अति*** काव्यांश में प्रयुक्त 'अत्याचार' शब्द में उपसर्ग 'अति' तथा मूल शब्द 'आचार' मौजूद है।

V. *(क)* **जो व्यक्ति भविष्य के बारे में पहले ही अनुमान लगा लेते हैं** प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से कवयित्री कहती है कि जो व्यक्ति भविष्य के बारे में पहले ही अनुमान लगा लेते हैं अर्थात् दूरदर्शी होते हैं, मैं उनके साथ खड़ी हूँ।

26. I. *(क)* **देश की जनता दुःखी और भूखी है** काव्यांश के आरंभ में ही कवि ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि जब तक देश की जनता दुःखी और भूखी है तब तक देश की स्वतंत्रता के उपलक्ष्य में मनाए जाने वाले मांगलिक उत्सव व्यर्थ एवं शोभाहीन होते हैं।

II. *(ख)* **लोगों की उदासी और कष्ट-निवारण के लिए** इस काव्यांश में कवि ने दुःखी-पीड़ित और अभावग्रस्त जनता की समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित किया है। इस कविता के माध्यम से वह शासकवर्ग को लोगों की उदासी और कष्ट-निवारण के लिए कह रहा है।

III. *(ग)* **देश की जनता दुःखों और आपदाओं से समझौता कर रही है** प्रस्तुत काव्य-पंक्ति में प्रयुक्त 'आँधियों' शब्द दुःखों और आपदाओं का प्रतीक है तथा 'चमन' शब्द जनता का प्रतीक है। इस प्रकार इसका अर्थ हुआ कि देश की जनता दुःखों और आपदाओं से समझौता कर रही है।

IV. *(ख)* **आक्रोश धीमा हो या तीव्र** प्रस्तुत काव्यांश में 'आग' आक्रोश का प्रतीक है। कवि कहना चाहता है कि जनता का आक्रोश धीमा हो या तीव्र, उसके कारण एक दिन क्रांति अवश्य आती है।

V. *(घ)* **व्यथित प्राणी** प्रस्तुत काव्यांश में 'अधजला दीपक भवन का' का आशय स्वतंत्र देश के ऐसे व्यक्ति से है जो अभावों में जीवन जीने के कारण व्यथित है।

27. I. *(क)* **उसे बाहर की असुरक्षा का आभास हो रहा है** माँ की कोख से झाँकती जिंदगी को घबराहट इसलिए हो सकती है, क्योंकि वह समाज में अपनी सुरक्षा को लेकर आश्वस्त नहीं है। समाज में व्याप्त शोषणकारी शक्तियाँ उसके जीवन रूपी पुष्प को नष्ट कर सकती हैं।

II. *(क)* **जब मासूमों पर अत्याचार होने लगे** प्रस्तुत पंक्ति से तात्पर्य बच्चों पर होने वाले अत्याचार अर्थात्, उनके शोषण से है जिसके कारण उनका बचपन समाप्ति की कगार पर पहुँच गया है।

III. *(ग)* **जब बचपन समाप्ति की कगार पर हो** कवि के अनुसार जब समाज में बच्चों के भीतर डर समा जाए और उनके बचपन के नटखटपन, चंचलता को समाप्त कर दे, तो यह स्थिति समाज के लिए अत्यधिक नुकसानदायक है।

IV. *(क)* **बचपन गोद में आने लगे** काव्यांश में कहा गया है कि जब बच्चे गोद में आने लगें अर्थात् उनके भीतर समाया हुआ खौफ़ व डर समाप्त हो जाए तो कुछ भी गलत नहीं है अर्थात् समाज सही मार्ग की ओर प्रशस्त है।

V. *(क)* **सोच-विचार का** कवि के अनुसार, अभी सोच-विचार का वक्त है, क्योंकि जिस समाज में व्यक्ति का अस्तित्व, उसकी अस्मिता खतरे में हो वहाँ व्यक्तियों को उस समाज की स्थिति में परिवर्तन लाने के लिए विचार-विमर्श करना आवश्यक है।

28. I. *(क)* **मन के भाव और शारीरिक बल** प्रस्तुत काव्यांश में 'कलम' प्रतीक है–मन के भाव एवं बुद्धि की शक्ति का, जबकि 'तलवार' प्रतीक है–शारीरिक शक्ति का।

II. *(क)* **कलम जन भावनाओं को उभारकर व्यापक स्तर पर बेहतर परिवर्तन लाने में समर्थ है** कलम के माध्यम से जन समूह के हृदय में विद्यमान शोषण एवं अन्याय के विरुद्ध आक्रोश एवं विद्रोह की चिंगारी सुलगाई जा सकती है।

III. *(घ)* **जब लोग अहिंसा को अपना लें** अहिंसा को अपनाने वाले लोगों के लिए शस्त्र का कोई औचित्य नहीं रह जाता।

IV. *(क)* **विष** हलाहल शब्द 'विष' का पर्यायवाची शब्द है, इसलिए सही उत्तर विकल्प (क) है।

V. *(ख)* **कलम से वीरतापूर्ण विचारों का निर्माण होता है** प्रस्तुत काव्यांश में कहा गया है कि कलम लोगों के दिलों में ही नहीं, बल्कि दिमाग में भी आग लगा देती है। इससे वीरतापूर्ण एवं क्रांतिकारी विचारों का जन्म होता है।

29. I. *(ख)* **सुख और कष्ट के** काव्यांश में स्पष्ट किया गया है कि भगवान राम ने राजमहल में मिलने वाले सुखों को त्यागकर अत्यधिक कष्ट भरे वन के जीवन को स्वीकार किया था। यहाँ 'रेशमी जूतियाँ' और 'नंगे पाँव' क्रमशः सुख और कष्ट के द्योतक हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

II. *(ग)* **राज्य त्यागकर वन प्रस्थान** प्रस्तुत काव्यांश के अनुसार, दशरथ पुत्र राम ने जब राज्य एवं राजमहल, सुख-समृद्धि का जीवन त्याग करके वनवास के लिए प्रस्थान किया, तब वे राजकुमार से भगवान बन गए।

III. *(घ)* **वन के संघर्षपूर्ण जीवन में रहकर** काव्यांश के अनुसार महापुरुषों का गौरवपूर्ण चरित्र वन के संघर्षपूर्ण जीवन में रहकर बना है अर्थात् मनुष्य का चरित्र कष्टों व कठिनाईपूर्ण जीवन में रहकर ही निखरता है।

IV. *(ख)* **बड़ी कठिनाइयों का सामना करके ही मनुष्य महान् बनता है** वनवास को कष्ट एवं अभाव का प्रतीक बनाकर कवि कहना चाहता है कि बड़ी कठिनाइयों का सामना करके ही मनुष्य महान् बनता है, जैसे राम और पांडवों ने किया।

V. *(क)* **वनवास के संघर्षपूर्ण जीवन को** प्रस्तुत कविता में वनवास में रहकर उठाए गए संघर्षों और कठिनाइयों के महत्त्व को उजागर किया गया है।

30. I. *(ख)* **वह ज़मीन के नीचे अँधेरे में पड़ी रहती है** प्रस्तुत काव्यांश के आरंभ में ही तने ने जड़ को निर्जीव कहा है, क्योंकि जड़ सदा जीवन से डरी-डरी रहती है और ज़मीन के नीचे अँधेरे में ही पड़ी रहती है।

II. *(ग)* **गतिशील होती है** काव्यांश में डाल ने अपनी सार्थकता बताई है कि वह सदा गतिशील रहती है। वह हवा के वेग के साथ ऊपर-नीचे होती रहती हैं, जबकि तना ज़रा-सा भी नहीं हिलता।

III. *(क)* **डाल हिलने पर ध्वनि नहीं करती** पत्तियाँ डाल की कमी की ओर संकेत करती हुई कहती हैं कि डाल केवल झूमती रहती है। वह हिलने पर ध्वनि नहीं करती है। इस ध्वनि-प्रधान दुनिया में वह मूक रहती है।

IV. *(ख)* **राहगीर** 'पंथी' का सही समानार्थी शब्द 'राहगीर' है।

V. *(घ)* **सहभागिता** प्रस्तुत काव्यांश मे एक वृक्ष के अस्तित्व में सभी अंगों की सार्थकता का वर्णन किया गया है। अतः इस काव्यांश का सर्वाधिक उचित शीर्षक 'सहभागिता' होगा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in